दीपिका व्याकरण

Teacher Manual Class-1 to 8

MONOPOLY
Innovation by Design...

दीपिका व्याकरण-1

1. परिचय

स्वयं कीजिए।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

2. स्वर

स्वयं कीजिए।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

3. व्यंजन

(क) स्वयं कीजिए। **(ख)** ख घ, छ झ, ट ड ण, त द न, फ भ, य ल, श स, त्र श्र **(ग)** क्ष, त्र, ज्ञ, श्र संयुक्त व्यंजन हैं। (घ) ड़, ढ़ विशेष ध्वनियाँ हैं।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

4. स्वरों की मात्राएँ

(क) स्वयं कीजिए। **(ख)** स्वयं कीजिए।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

5. अनुस्वार व अनुनासिक और विसर्ग

(क) पलंग, बंदर, पंख, हंस **(ख)** आँगन, चाँदनी, बाँसुरी, आँचल **(ग)** प्रातः, नमः, पुनः, अतः

(घ) क्ष – क्षत्रिय, कक्षा; त्र – त्रिशूल, पत्र;
ज्ञ – यज्ञ, ज्ञान; श्र – श्रम, श्रवण

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

6. शब्द-रचना

(क) स्वयं कीजिए। **(ख)** स्वयं कीजिए।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

7. वाक्य-रचना

(क) , **(ख)**, **(ग)**, **(घ)** स्वयं कीजिए।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

8. संज्ञा (नाम वाले शब्द)

(क) स्वयं कीजिए। **(ख)** स्वयं कीजिए।

(ग) 1. स्कूल 2. गीता 3. कुतुबमीनार 4. लखनऊ

(घ) 1. कुर्सी, कागज, अध्यापक 2. दरवाजा, खिड़की 3. तितली, फूल, बाग 4.साड़ी, धोबी 5. क्रिकेट, मैदान, खिलाड़ी

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

9. लिंग

(क) स्वयं कीजिए। **(ख) स्त्री जाति –** बंदरिया, शेरनी, हथिनी, दादी, मम्मी, बहन, बिल्ली, गुड़िया, चुहिया, मोरनी।

पुरुष जाति – मुर्गा, चाचा, बैल, बंदर, हिरन, लड़का **(ग)** पुल्लिंग (1, 4, 5, 7, 9) स्त्रीलिंग (2, 3, 6, 8, 10)

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

10. सर्वनाम (सबके नाम)

(क) वह, तुम, मैं, हम, रमेश (✗), राजीव (✗), चेहरा (✗), विशाल (✗) **(ख)** 1. वह 2. मैं 3. मेरा 4. आप 5. हमारा **(ग)** स्वयं कीजिए।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

11. वचन

(क) 1. एकवचन 2. बहुवचन 3. बहुवचन 4. एकवचन 5. बहुवचन 6. एकवचन 7. एकवचन 8. बहुवचन 9. एकवचन 10. बहुवचन **(ख)**

एकवचन – दरवाजा, चाबी, कटोरी, उँगली, थाली

बहुवचन – गन्ने, चादरें, पुस्तकें, रुपये, चिड़ियाँ

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

12. विशेषण (विशेषता बताने वाले शब्द)

(क) 1. हरा, लंबा, 2. मोटा, विशाल 3. बहादुर, साहसी 4. सफेद, छोटा 5. लाल, मीठा 6. नई, पुरानी **(ख)** 1. र 2. य 3. ल 4. व 5. श 6. ष 7. अ 8. ब 9. स 10. द

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

13. क्रिया

(क) स्वयं कीजिए। **(ख)** 1. दादी खिलौने खरीद रही हैं। 2. दादाजी टहल रहे हैं। 3. रोहित स्कूल जा रहा है। 4. चिंकी नृत्य कर रही है। 5. आज बच्चे नदी में नहाएँगें। **(ग)** 1. पढ़ना 2. लिखना, खेलना 3. हँसना, खींचना 4. दौड़ना, चित्र बनाना **(घ)** स्वयं कीजिए।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

14. पर्यायवाची शब्द

(क) 1. वृक्ष, तरु 2. चंद्रमा, शशि 3. सर्प, भुजंग 4. सुमन, पुष्प 5. आसमान, आकाश **(ख)** 1. किताब, 2. चाँद 3. आकाश 4. फूल

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

15. दिन और महीने

(क) 1. तीसरा 2. रविवार 3. इतवार 4. मंगलवार 5. सोमवार **(ख)** 1. 12 महीने 2. 31 दिन 3. 30 दिन 4. 31 दिन

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

16. चित्र-वर्णन

स्वयं कीजिए।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

दीपिका व्याकरण-2

1. वार्तालाप

स्वयं कीजिए।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

2. स्वर और व्यंजन

(क) 1. भाषा की सबसे छोटी ध्वनि जिस रूप में लिखी जाती है, उसे वर्ण कहते हैं। 2. जिन वर्णों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से होता है, वे वर्ण स्वर कहलाते हैं। हिंदी में 11 स्वर हैं- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ। 3. जिन वर्णों का उच्चारण करते समय हवा रुकावट के साथ मुख से निकलती है, वे वर्ण व्यंजन कहलाते हैं। व्यंजनों का स्पष्ट उच्चारण करने में स्वरों की सहायता ली जाती है। पाँच व्यंजन- क, च, ट, त, प **(ख)** 1. लाल 2. लिख 3. हलवा 4. मिल 5. दाग 6. छिप 7. झाग 8. गिन 9. नाम **(ग)** 1. व्यंजन 2. व्यंजन 3. स्वर 4. स्वर, 5. व्यंजन 6. व्यंजन **(घ)** 1. मछली 2. छिपकली, 3. कमीज 4. तोता 5. कौआ 6. ओखली **(ङ)** अनार, आम, हिरन, तितली।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

3. संयुक्त तथा द्वित्त्व व्यंजन

(क) बिल्ली, बच्चा, बाल्टी, पेन्सिल, मक्खी, कुल्हाड़ी, पत्ता, चम्मच, गड्ढ़ा **(ख)** 1. रस्सी, अस्सी 2. डिब्बा, गुब्बारा 3. शिष्य, मनुष्य 4. पक्का, धक्का 5. पत्थर, कत्था 6. झण्डा, अण्डा 7. विद्वान, द्वार 8. गत्ता, पत्तियाँ 9. मच्छर, गुच्छा 10. गन्ना, मुन्ना 11. छप्पर, पप्पू 12. कष्ट, दुष्ट 13. संख्या, मुख्य 14. सच्चा, कच्चा 15. मम्मी, अम्मा 16. मक्खन, मक्खी 17. छज्जा, लज्जा 18. व्यय, भव्य 19. पट्टी, लट्टू 20. बल्ला, दिल्ली

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

4. संज्ञा

(क) किसी प्राणी, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं; जैसे- रवि, पसिंल, दिल्ली, बुढ़ापा आदि। **(ख)** 1. जतिन, कक्षा 2. नीना, पुस्तक 3. अध्यापक, घड़ी 4. ताजमहल, आगरा 5. शेर, हिरन **(ग)** सूरज, तोता, शेर, किताब। **(घ)** इंडियागेट, कुतुबमीनार, ताजमहल। **(ङ)** 1. शेर 2. दिल्ली 3. हाथी 4. बिल्ली 5. नमक **(च)** 1. मुंबई एक शहर का नाम है। 2. शेर जंगल का राजा है। 3. सरिता नदी का पर्यायवाची है। 4. मैं शिमला घूमने गया था। 5. भालू खूँखार जानवर है। 6. पंकज कमल का पर्यायवाची है। 7. वह कानपुर में रहता है 8. यह मेरी पुस्तक है। 9. उसने लाल पतंग खरीदी है। 10. यह पेंसिल तुम्हारी है।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

5. लिंग

(क) लड़का-लड़की, मुर्गा-मुर्गी, राजा-रानी, मोर-मोरनी। **(ख)** पुल्लिंग (1, 3, 4, 7, 8, 10, 11) स्त्रीलिंग (2, 5, 6, 9, 12) **(ग)** 1. मोरनी 2. धोबिन 3. बकरा 4. माली 5. नानीजी 6. लड़का **(घ)** पुल्लिंग (2, 3, 5, 8) स्त्रीलिंग (1, 4, 6, 7) **(ङ)** 1. सैनिक 2. माता 3. रानी 4. भाई 5. मुर्गा

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

6. एक या अनेक

(क) मछलियाँ, छडियाँ, तितली, गेंदें, चिड़िया, घोड़ा **(ख)** गाड़ी-गाड़ियाँ, ताला-ताले, कुर्सी-कुर्सियाँ, गमला-गमले, चूहा-चूहे, मेज-मेजें, घोड़ा -घोड़ें **(ग)** 1. मछलियाँ 2. लाठियाँ 3. तितलियाँ 4. तारे 5. मक्खियाँ 6. चिड़ियाँ 7. मालाएँ 8. बकरियाँ 9. गुब्बारे 10. रस्सियाँ **(घ)** 1. गायें 2. गुब्बारे 3. नदियाँ 4. घोड़ा 5. लाठी

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

7. सर्वनाम

(क) संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द

सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे- मैं, तुम, हम, वे आदि। **(ख)** 1. हम 2. यह 3. तुम 4. मैं 5. कोई **(ग)** 1. हम 2. हमारी 3. तुमने 4. उसका 5. हमने

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

8. विशेषण

(क) कड़वा करेला, मीठा, आम, नीली कमीज, खट्टी इमली, सुंदर लड़की। **(ख)** मीठी जलेबी, वफादार कुत्ता, शैतान लड़के, ऊँचा पेड़, कच्चा आम, लाल साड़ी, पालतू पशु, लंबा बाँस, रसीले संतरे, मधुर गीत, नीला आकाश, काला कौआ

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

9. क्रिया

(क) लड़का खाना खा रहा है।, लड़का टी.वी. देख रहा है।, माता जी खाना बना रही है।, लड़की दौड़ रही है।, लड़का सो रहा है।, बच्चे पौधे को पानी दे रहे हैं।, लड़का व्यायाम कर रहा है।, लड़की गुब्बारा उठा रही है।, लड़का मुँह धो रहा है। **(ख)** स्वयं कीजिए। **(ग)** स्वयं कीजिए।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

10. पर्यायवाची

(क) समान अर्थ बताने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं; जैसे- अग्नि, आग, अनल। **(ख)** 1. पावक, अग्नि 2. पितृ, जनक 3. माँ, जननी 4. भूमि, पृथ्वी 5. रवि, दिनकर 6. भगवान, परमात्मा 7. चन्द्रमा, शशि 8. मानव, मनुष्य 9. तरु, पादप 10. नेत्र, नयन 11. सखा, दोस्त 12. पुष्प, सुमन 13. गृह, सदन 14. जल, नीर **(ग)** 1. मौसी 2. पेंसिल 3. चन्द्र 4. घाटी 5. भौंह **(घ)** बादल–जलद, नेत्र–चक्षु, सूर्य–रवि, समुद्र–रत्नाकर, हवा–वात

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

11. विलोम शब्द

(क) परस्पर उल्टा अर्थ बताने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं; जैसे- दिन-रात, गर्म–ठंडा आदि। **(ख)** 1. बड़ा 2. नीचे 3. बाहर **(ग)** 1. दिन–रात 2. अपना–पराया 3. प्राचीन–नवीन 4. असली–नकली 5. प्रात:–सायं **(घ)** 1. जाना, हमें बाहर जाना है। 2. बुद्धिमान, वह बुद्धिमान लड़का है। 3. मृत्यु, सैनिक मृत्यु के भय से नहीं घबराते। 4. पराजय, मैं पराजय स्वीकार नहीं करूँगा।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

12. वाक्य-रचना

(क) 1. गरीमा खेल रही है। 2. लाल गाड़ी बाहर खड़ी है। 3. आज स्कूल का अवकाश है। 4. रोहित विद्यालय जा रहा है। 5. मेरा नाम अभिनव है।

(ख) 1. मैं घर जाता हूँ। 2. मीरा ने खाना खाया। 3. माता जी खाना बनाती हैं 4. चंद्रमा रात में निकलता है 5. शेर दहाड़ता है।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

13. विराम-चिह्नों का प्रयोग

(क) 1. वाक्य के पूरा होने पर पूर्ण विराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे- राम जाता है। 2. जिन वाक्यों में प्रश्न पूछा गया हो, उनके अन्त में प्रश्न चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे- तुम कहाँ गए थे?

(ख) 1. रेखा, तुम्हारे हाथ में क्या है? 2. किससे बात करनी है? 3. दादी, नानी, मौसी और मम्मी घूमने गई हैं। 4. अखबार में यह क्या लिखा है? 5. भगवान, ईश्वर, अल्लाह और यीशु एक ही हैं।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

14. वाक्यांश के लिए एक शब्द और अशुद्धि शोधन

(क) 1. भाई 2. शून्य 3. ज्ञानी 4. दाँत 5. लक्ष्मण 6. नादान 7. धर्म 8. कुआँ 9. तिथि **(ख)** 2. मितभाषी 3. अनपढ़ 4. आस्तिक 5. सर्वप्रिय।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

15. संख्याएँ

(क) 1. छह 2. नौ 3. तेरह 4. पंद्रह 5. उन्नीस 6. सत्रह **(ख)** 1. बारह–१२, सात–७, सोलह–१६, उन्नीस–१९

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

16. दिन और महीने

(क) 1. मंगलवार 2. बुधवार 3. बृहस्पतिवार 4. रविवार 5. शनिवार **(ख)** स्वयं कीजिए।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

17. पशु-पक्षियों की बोलियाँ

घोड़ा–हिनहिनाना, कबूतर–गुटर-गूँ, मोर–कुहुकना, हाथी–चिंघाड़ना, कुत्ता–भौं-भौं, तोता–टें-टें।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

दीपिका व्याकरण-3

1. भाषा और व्याकरण

(क) स्वयं कीजिए। **(ख)** 1. आज मैं बहुत खुश हूँ। 2. तुम कहाँ रहते हो? 3. मेरी मम्मी का नाम रिया है। 4. गाय गास खा रही है। **(ग)** 1. मोहन- सोहन, आज घर पर कैसे? क्या तुम्हारे विद्यालय में आज अवकाश है। सोहन- नहीं मोहन, आज मेरे विद्यालय में अवकाश नहीं है। माँ को घर पर आवश्यक कार्य था इसलिए मैंने विद्यालय से अवकाश लिया।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

2. वर्ण-विचार

(क) 1. मुख से निकली ध्वनियों को लिखने के लिए निश्चित चिह्न वर्ण या अक्षर कहलाते हैं। 2. वर्ण दो प्रकार के होते हैं- स्वर और व्यंजन 3. दो व्यंजनों के मेल से बने व्यंजन संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं। हिंदी भाषा में चार संयुक्त व्यंजन हैं- क्ष, त्र, ज्ञ, श्र **(ख)** 1. पवर्ग- प फ ब भ म 2. टवर्ग- ट ठ ठ ढ ण 3. कवर्ग- क ख ग घ ङ 4. चवर्ग- च छ ज झ ञ 5. तवर्ग- त थ द ध न **(ग)** स्वयं कीजिए। **(घ)** उल्लू, चम्मच, मक्खी, बस्ता **(ङ)** पिंटू एक हँसमुख बच्चा था। एक दिन उसने छत पर बंदर देखा। बंदर बड़ा ही चंचल था। वह पिंटू की नकल कर रहा था। पिंटू ने उसे खाने के लिए अंगूर दिए। बंदर ने उन्हें संभाल कर रख लिया। प्रातः जब पिंटू ने देखा तो अंगूर उसकी जेब में थे, तभी ताँगेवाला आ गया। वह मोर का पंख लिए हुए था। वहीं मदारी बाँसुरी बजा रहा था।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

3. मात्राएँ तथा शब्द-रचना

(क) 'अ' स्वर के मिलने पर; जैसे- क् + अ = क 2. प्रत्येक स्वर का एक निश्चित चिह्न होता है, जिसे मात्रा कहते हैं। 3. वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं। **(ख)** रुपया, फूल, गुलाब, सूरज, कील, थैला, मछली, कोयल। **(ग)** सैनिक → कलम → मगर → रथ → थरमस → सपेरा → खीरा

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

4. संज्ञा (नाम वाले शब्द)

(क) 1. किसी प्राणी, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। 2. जिस संज्ञा शब्द से किसी प्राणी, वस्तु, स्थान आदि की संपूर्ण जाति का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे- किसान, लड़का। 3. किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे- गंगा, रामायण। 4. जिस संज्ञा शब्द से किसी प्राणी या वस्तु के गुण, भाव या दशा का बोध हो, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे- खटास, भलाई। **(ख)** 1. व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. भाववाचक संज्ञा 3. व्यक्तिवाचक संज्ञा 4. जातिवाचक संज्ञा 5. जातिवाचक संज्ञा **(ग)** 1. हँसी 2. दौड़ना 3. समीप 4. पीना 5. अलग

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

5. लिंग

(क) 1. धोबिन 2. मोरनी 3. लड़की 4. गुड़िया 5. चुहिया **(ख)** स्वयं कीजिए। **(ग)** वर-वधू, बहन-बहनोई, पुरुष-स्त्री, सास-ससुर, सम्राट-साम्राज्ञी, भतीजी-भतीजा, नर-नारी, ताई जी-ताऊ जी, अभिनेता-अभिनेत्री, नानीजी-नानाजी।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

6. वचन

(क) 1. शब्द के जिस रूप से उसकी संख्या के बारे में पता चले, उसे वचन कहते हैं। 2. वचन दो प्रकार के होते हैं- **1. एकवचन**- गमला, खिड़की आदि **2. बहुवचन**- गमले, खिड़कियाँ आदि। **(ख)** एकवचन- घंटा, बच्चा, किताब, केला, पंखा, तोता। बहुवचन- मक्खियाँ, चिड़िया, सड़के, रोटियाँ, दवाइयाँ, नदियाँ **(ग)** 1. अ 2. ब 3. स 4. अ 5. ब **(घ)** 1. महिलाएँ 2. दवाइयाँ 3. बिल्लियाँ 4. बकरियाँ 5. बच्चे 6. नदियाँ 7. कुत्ते 8. बसें 9. केले 10. कहानियाँ।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

7. सर्वनाम (नाम की जगह)

(क) 1. अ 2. अ 3. स 4. ब 5. स **(ख)** 1. वह 2. मैं 3. वह 4. जो 5. उसने 6. मुझे 7. उसके 8. मुझे 9. तुम्हारा 10. मैं। **(ग) सर्वनाम शब्द:** मैं, अपनी, वे, मैंने, उन्होंने, मुझे, मेरा, हमारे, हम, अपने। **(घ)** वे, उन्होंने, उन्हें, मैं, तुम, हमें **(ङ)** 1. मैं जा रहा हूँ। 2. वे कल दिल्ली गए। 3. तुम्हें क्या चाहिए? 4. उसने एक साँप मारा। 5. वह नाच रही है।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

8. विशेषण (विशेषता बताने वाले शब्द)

(क) 1. जो शब्द संज्ञा शब्दों की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं; जैसे- लाल, सुन्दर आदि। 2. विशेषण जिन शब्दों की विशेषता बताते है, उन्हें विशेष्य कहते हैं; जैसे- लाल फ्रॉक, सुन्दर लड़की **(ख)** 1. सुंदर 2. लंबी 3. मीठा 4. सफेद 5. रंग-बिरंगी 6. काले 7. बूढी 8. बड़ा 9. छोटा।
(ग) 1. रात 2. आइसक्रीम 3. सिपाही 4. संतरे 5. लोमड़ी 6. मौसम **(घ)** 1. सुन्दर 2. छोटा 3. मीठी 4. बड़ा 5. सफेद 6. लंबा।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

9. क्रिया (काम वाले शब्द)

(क) 1. जिन शब्दों से किसी कार्य के करने या होने का बोध हो, उन्हें क्रिया कहते हैं; जैसे- आना, जाना। 2. क्रिया दो प्रकार की होती है- अकर्मक, सकर्मक 3. अकर्मक क्रिया में क्रिया का फल किसी दूसरे शब्द पर नहीं पड़ता जबकि सकर्मक क्रिया का अर्थ कर्म के बिना पूरा नहीं होता। **(ख)** 1. गाया 2. सुनाता है 3. पढ़ाती हैं 4. बना 5. भीग **(ग)** 1. वह हँस रहा है। 2. बन्दर कूद रहा है। 3. गायक गाना गा रहा है। 4. मैं डर गया। 5. बिल्ली चूहे पर झपटी। 6. चिड़ियाँ उड़ रही हैं।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

10. शब्द-भंडार

1. पर्यायवाची

(क) 1. पुष्प, सुमन 2. स्त्री, नारी 3. गज, हस्ती 4. नेत्र, नयन **(ख)** 1. जननी 2. सुत 3. साँझ 4. प्रात: 5. हर्ष **(ग)** 1. स 2. द 3. य 4. अ 5. ब

आओ दोहराए: स्वयं कीजिए।

2. विलोम शब्द

(क) 1. स 2. द 3. य 4. अ 5. र 6. ब
(ख) 2. पास 3. अनेक 4. पुराना 5. रोना 6. बंद

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

3. समूह वाले शब्द 4. वाक्यांश के लिए एक शब्द

(क) कारवाँ, टुकड़ी, गुच्छा, गट्ठर, रेवड़, झुंड
(ख) 1. स 2. द 3. य 4. ब 5. अ **(ग)** 1. शरारती 2. दर्जी 3. फिल्मी 4. अपठनीय 5. सपेरा

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

11. मुहावरे

(क) ऐसा वाक्यांश जो सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी विशेष व लक्षित अर्थ का बोध कराता है, मुहावरा कहलाता है। **(ख)** 1. स 2. अ 3. ब 4. स 5. ब **(ग)** 1. बेशर्म होना- यह नौकर तो चिकना घड़ा है, इस पर डाँट-फटकार का कोई असर नहीं होता। 2. बाधा डालना- मेरे हर काम में तुम टाँग अड़ाते हो। 3. प्रभाव होना- आजकल तो सब जगह तुम्हारी ही तूती बोलती है। 4. बुद्धि भ्रष्ट होना- उस बेईमान पर भरोसा कर बैठा, मेरी ही अकल पर पत्थर पड़ गए थे। 5. मूर्ख- राहुल तो अक्ल का दुश्मन है, कुछ समझता ही नहीं।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

12. विराम चिह्नों का प्रयोग

(क) 1. लिखते समय कहाँ कितना रुकना है? इसे स्पष्ट करने के लिए हम जिन चिह्नों का प्रयोग करते हैं, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं। 2. दो या दो से अधिक शब्दों को अलग करते समय हमें थोड़ा रुकना पड़ता है उस समय वहाँ अल्प विराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे- दीपक, राहुल, और सीता दिल्ली गए। 3. जब किसी वाक्य में प्रश्न पूछा जाए तो उसके अंत में यह चिह्न लगाया जाता है; जैस- क्या तुम कल स्कूल गए थे?
(ख) 1. हम कहाँ जा रहे हैं? 2. तमिलनाडु के लोगो को 'तमिल' कहते हैं। 3. तुम अपना कार्य करते रहो, मैं अपना कार्य करूँगा। 4. रामू, सोनू, हरी व कमला घूमने गए। 5. वाह! हम जीत गए।
(ग) 1. स 2. द 3. य 4. अ 5. ब
(घ) स्वयं कीजिए

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

13. संख्याएँ

(क) 1. ब 2. स 3. द 4. य 5. र 6. अ **(ख)** 1. अड़तीस 2. चवांलीस 3. अट्ठाइस 4. चालीस 5. छियासठ 6. अट्ठासी 7. इक्यासी 8. छियानवे **(ग)** ४२, ४५, ४६, ४७, ५०, ५१, ५४, ५६, ५८, ६०, ६२, ६४, ६५, ६७, ६६, ७२, ७४, ७६, ७८, ८१
(घ) 1. चौंतीस 2. बयालीस 3. पैंतालीस 4. पचास 5. बहत्तर 6. पच्चीस 7. तिरेसट 8. पचानवे

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

14. वर्तनी

(क) 1. शब्द-रचना में प्रयोग किए गए वर्णो व मात्राओं का सही प्रयोग वर्तनी कहलाता है। 2. मात्रा संबंधी नियमों को ध्यान में रखने से मात्रओं की अशुद्धियों से बचा जा सकता है। 3. यदि हम गलत वर्तनी का प्रयोग करेंगे तो न तो वह हमें स्वयं ठीक से समझ आएगी न ही किसी दूसरे को। 4. अनुस्वार उन शब्दों में प्रयोग किया जाता है जिनका उच्चारण नाक से होता है तथा जिस वर्ण पर उसका उच्चारण हो रहा हो उसी वर्ण पर बिंदी लगाई जाती है, इस नियम को ध्यान में रखकर अनुस्वार की अशुद्धियों से बचा जा सकता है। 5. सही उच्चारण न होने से हम सही लिख भी नहीं सकते इसलिए उच्चारण पर ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है। **(ख)** शशांक ने एक बंदर को अंगूर खाते देखा। उसने ऐनक भी लगा रखी थी। सामने एक होटल था, जिसमें एक बच्चा बैठा दूध पी रहा था। बंदर का ध्यान उस बच्चे की ओर गया। बच्चे के हाथ से गिलास छूटकर गिर गया। वह टूट गया। बंदर को देखकर बच्चा रोने लगा। बंदर वहाँ से चला गया।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

दीपिका व्याकरण-4

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. क्योंकि भाषा के द्वारा ही हम अपने विचारों या भावों को दूसरों तक पहुँचाते हैं तथा दूसरों के भावों या विचारों को समझते हैं। 2. किसी भाषा को शुद्ध बोलना, पढ़ना, लिखना, और समझना हम व्याकरण के माध्यम से ही सीखते हैं।

(ख) 1. लिखित, मौखिक, लिखित, मौखिक **(ग)** 1. मलयालय 2. बंगाल 3. तमिल 4. मराठी 5. गुजराती

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

2. वर्ण, वर्णमाला और मात्राएँ

(क) किसान – क् + इ + स् + आ + न् + अ
पुस्तक – प् + उ + स् + त् + अ + क् + अ
माला – म् + आ + ल् + आ
कमल – क् + अ + म् + अ् + ल् + अ

(ख) सड़क, लड़ना, डंडा, पेड़, डमरू, लड़की, डिब्बा, गुडिया, डाकिया **(ग)** चाँद, बंदर, जंगल, संध्या, मुँह, साँप, चंदन, भ्रांति, सिंह, ऊँट, अँधेरा, रंग, पतंग, माँ, अंदर, सूँड

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

3. शब्द-विचार

(क) 1. अग्नि 2. कोकिला 3. छिद्र 4. कर्म 5. छत्र 6. मयूर **(ख)** स्वयं कीजिए। **(ग)** 1. साँप 2. मौत 3. दूध 4. सात 5. पेड़ 6. पाँच **(घ)** 1. बालक 2. कारखाना 3. पहाड़ 4. समोसा 5. सैनिक 6. कंप्यूटर 7. देखभाल 8. बैलगाड़ी

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

4. संज्ञा

(क) 1. किसी प्राणी, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं; जैसे- राम, पुस्तक, मेरठ, वीरता। 2. संज्ञा के तीन भेद है- व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, भाववाचक संज्ञा।

(ख) 1. संज्ञा 2. जातिवाचक 3. भाववाचक

(ग) 1. भारत (व्यक्तिवाचक), देश (जातिवाचक) 2. मालिनी (व्यक्तिवाचक), किताब (जातिवाचक) 3. चीनी (जातिवाचक), मिठास (भाववाचक) 4. अध्यापिका (जातिवाचक) अध्यापक (जातिवाचक) 5. लालकिला (व्यक्तिवाचक), दिल्ली (व्यक्तिवाचक) **(घ)** 1. लड़कपन 2. बचपन 3. मिठास 4. प्यास 5. वीरता 6. मित्रता 7. पूजा 8. शत्रुता। **(ङ)** 1. सुंदरता 2. मित्रता 3. लंबाई 4. मिठास **(च)** स्वयं कीजिए।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

5. लिंग

(क) 1. शब्दों के जिस रूप से स्त्री या पुरुष जाति का पता चलता है, उन्हें लिंग कहते हैं; जैसे- दादा-दादी, लड़का-लड़की 2. लिंग के दो भेद होते हैं- पुल्लिंग, स्त्रीलिंग **(ख)** 1. युवती 2. मुर्गी 3. गायिका 4. लुहारिन 5. सिंहनी 6. बुद्धिमती 7. सेविका 8. पंडिताइन **(ग) पुल्लिंग**- राजा, गुब्बारा, छाता। **स्त्रीलिंग**- तितली, पतंग, मछली।

(घ) सिंहनी, स्त्री, अध्यापक, लुहार, जेठानी, सेठानी, नौकर।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

6. वचन

(क) संज्ञा शब्दों के जिस रूप से उनके एक या

एक से अधिक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं; जैसे- पंखा-पंखें, लड़का-लड़के आदि। 2. वचन के दो भेद होते हैं- एकवचन, बहुवचन जैसे- लड़का, घोड़ा व लड़के, घोड़े 3. आदर प्रकट करने के लिए बहुवचन रूप का प्रयोग किया जाता है; जैसे- दादाजी आ रहे हैं।, गुरुजी पूजा कर रहे हैं। 4. आँसू- मेरे आँसू निकल पड़े।, भाग्य- तेरे तो भाग्य ही फूट गए। **(ख) एकवचन**- पंखा, दवाई, रोटी, कहानी **बहुवचन**- वस्तुएँ, मेजें, मछलियाँ, चादरें। **(ग)** स्वयं कीजिए। **(घ)** 1. अ 2. स 3. ब 4. अ 5. ब **(ङ)** 1. एकवचन 2. बहुवचन 3. एकवचन 4. बहुवचन 5. एकवचन

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

7. सर्वनाम

(क) 1. जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किये जाते है, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। 2. सर्वनाम के छः भेद हैं- पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चय-वाचक, संबंधवाचक, प्रश्नवाचक, निजवाचक। 3. पुरुषवाचक सर्वनाम- जिन सर्वनामों से बोलने वाले (वक्ता), सुनने वाले (श्रोता) या अन्य व्यक्ति जिसके बारे में बात कर रहे हों का बोध होता है, वे पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते है; जैसे- मैं, तुम, वह, आदि। 4. जो सर्वनाम शब्द किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध कराए, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे- यह, ये, वह, वे तथा जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध न हो उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते है; जैसे- कोई, कुछ आदि।

5. **संबंधवाचक सर्वनाम**- जो सर्वनाम शब्द वाक्य में आए दूसरे सर्वनाम शब्दों के साथ संबंध बताते हैं, उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे- जो-सो, जैसा-वैसा आदि।

प्रश्नवाचक सर्वनाम- जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे- कौन, क्या आदि।

निजवाचक सर्वनाम- जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग कर्ता स्वयं के लिए करता है, उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे- स्वयं, खुद ही, अपने आप आदि।

(ख) 1. वह, तुम्हारा- पुरुषवाचक सर्वनाम 2. जो, वह- संबंधवाचक सर्वनाम 3. किसी- अनिश्चय -वाचक सर्वनाम 4. वह, खुद- पुरुषवाचक सर्वनाम , निजवाचक सर्वनाम 5. कुछ- अनिश्चयवाचक सर्वनाम 6. कौन- प्रश्नवाचक सर्वनाम 7. यह, वह- निश्चयवाचक सर्वनाम 8. स्वयं- निजवाचक सर्वनाम **(ग) उत्तम पुरुष–** मैं, हमें, मुझे, मेरा, हमको। **मध्यम पुरुष–** तुम, तू, तुझे, तुमसे, तुमकों, आप। **अन्य पुरुष**- वह, वे, उन्हें, उनका, उन्होंने, उसने

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

8. कारक

(क) 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंधवाक्य में क्रिया, अन्य संज्ञा या सर्वनाम से जाना जाए, उसे कारक कहते हैं; जैसे- 1. मुन्ना खिलौना लाया। (क्रिया किसने की - मुन्ना ने) 2. मम्मी ने स्वेटर बुना। (क्या बुना - स्वेटर) 3. मुर्गा दीवार पर बैठा है। (कहाँ बैठा है - दीवार पर)

(ख)

कारक	**कारक चिह्न**
कर्ता कारक	ने
कर्म कारक	को
करण कारक	से, के, द्वारा
संप्रदान कारक	को, के लिए
अपादान कारक	से (पृथक)
संबंध कारक	का, के, की, रा, रे, री
अधिकरण कारक	में, पे, पर
संबोधन कारक	हे, अरे, ओ

(ग) 1. अधिकरण कारक 2. अपादान कारक 3. अधिकरण कारक 4. करण कारक 5. कर्म कारक 6. संप्रदान कारक 7. संबंधकारक 8. संबोधन कारक 9. कर्म कारक 10. कर्ता **(घ)** 1. में 2. के 3. ने, को 4. से 5. ने, को **(ङ)** 1. सीमा ने खाना बनाया। 2. माँ ने चाकू से फल काटा। 3. वृक्ष पर पक्षी बैठे हैं। 4. कार पेट्रोल से चलती है। 5. बच्चे को रोटी दो। 6. पेड़ से फल गिरा।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

9. विशेषण

(क) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताते हैं, विशेषण कहलाते हैं; जैसे- पीला फूल। **(ख)** स्वयं कीजिए। **(ग) विशेषण**- घोड़ा, मैले, ईमानदार, थोड़ा, उपयोगी। **विशेष्य**- तेज, वस्त्र,

श्रुति, पानी, गाय। **(घ)** 1. जहरीला 2. ममेरा 3. दयालु 4. ऊपरी 5. गुणी

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

10. क्रिया

(क) 1. जिन शब्दों से किसी काम के करने या होने का पता चले, उन्हें क्रिया कहते हैं; जैसे- खाना, पीना, पढ़ना आदि। 2. क्रिया का मूल रूप धातु कहलाता है; जैसे- लिख, पढ़, खा आदि। 3. कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं- सकर्मक क्रिया, अकर्मक क्रिया। **(ख)** 1. शर्माना 2. ललचाना 3. लजाना 4. झुठलाना **(ग)** 1. कटवाना 2. जुड़वाना 3. भिजवाना 4. मँगवाना **(घ)** 1. ब 2. स 3. ब 4. अ

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

11. काल

(क) 1. क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं। 2. **भूतकाल**- बीता हुआ समय भूतकाल कहलाता है; जैसे- कल विद्यालय खुला था। **वर्तमानकाल**- जो समय अभी चल रहा है, उसे वर्तमानकाल कहा जाता है; जैसे- बच्चे पढ़ रहे हैं। **भविष्यत्काल**- आने वाला समय भविष्यत्काल के नाम से जाना जाता है; जैसे- बच्चे पढ़ेंगे।

(ख) 1. चेतन भोजन कर चुका था। 2. अनुज समय पर स्कूल पहुँच रहा है। 3. सीता पार्क में पढ़ेगी। 4. वैभव कल मेरे घर आया था। 5. नीलिमा कल अपने मामा जी के घर जाएगी।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

12. विराम चिह्नों का प्रयोग

(क) 1. लिखते समय कहाँ कितना रुकना है, इसे स्पष्ट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता हैं, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं। 2. अल्प विराम, अर्द्ध-विराम, पूर्ण विराम, विस्मयादिबोधक, प्रश्नसूचक **(ख)** 1. (?) 2. (,) 3. (“ ”) 4. (^) 5. (०) 6. (-) **(ग)** 1. फूलों की माला ले आओ। 2. नेहरू जी ने कहा था, “आराम हराम है।” 3. मैं, तुम और वह सभी चलेंगे। 4. वाह! क्या बात है। 5. तुम्हारा क्या नाम है? 6. पाप से घृणा करो, पापी से नहीं। 7. गुरुजी कहते हैं, “सदा सत्य बोलो।” 8. मेरा नाम अनुराग शर्मा है। 9. लाभ-हानि तो व्यापार में लगे रहते हैं। 10. सुख-दु:ख जीवन में आते-जाते रहते हैं। 11. छि:! कितनी गंदगी है। 12. तुम कौन हो? 13. शाबाश! और खेलो। 14. वह क्या कर रहा था? 15. बार-बार प्रश्न मत पूछो। 16. जब मैं वहाँ पहुँचा, वह जा चुका था।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

13. शब्द-भंडार

(क) 1. परस्पर समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं। 2. उल्टा अर्थ बताने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं। 3. कई शब्दों की जगह जब एक शब्द का प्रयोग हो उसे अनेक शब्दों के लिए एक शब्द कहते हैं। **(ख)** 1. सरोवर 2. इच्छा 3. अपमान 4. निकेतन 5. राक्षस **(ग)** 1. इस दुकान में कपड़े बड़े घटिया हैं। 2. राजन का कोई शत्रु नहीं है। 3. धूप से सारे फूल मुरझा गए। 4. मीना और नीना आज अनुपस्थित हैं। 5. राहुल सुस्त बालक है। **(घ)** 1. करिश्मा अभिनेत्री है। 2. वह कुम्हार है। 3. राहुल अपने विद्यालय के वार्षिकोत्सव में भाग लेता है। 4. मदर टेरेसा परोपकारी स्त्री थीं। 5. रोहन, अमित का अनुज है। 6. जादूगर के जादू से चीजें अदृश्य हो गईं। 7. उसका नौकर अनपढ़ है। 8. यह दुर्लभ वस्तु है। **(ङ)** 1. स 2. द 3. य 4. अ 5. ब

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

14. मुहावरे

(क) 1. जब कुछ शब्द मिलकर सीधा अर्थ न देकर विशेष अर्थ देते हैं, उन्हें मुहावरे कहते हैं। 2. मुहावरे के प्रयोग से भाषा प्रभावशाली हो जाती है। **(ख)** 1. आँख दिखाई 2. कान भरती 3. जी नहीं चुराना 4. ताक में 5. नाक में दम **(ग)** 1. स 2. अ 3. स **(घ)** 1. उँगली उठाना 2. गले का हार होना 3. पेट में चूहे कूदना 4. आँखें खुलना 5. कान भरना **(ङ)** स्वयं कीजिए। **(च)** 1. स 2. द 3. य 4. अ 5. ब

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

दीपिका व्याकरण-5

1. भाषा, लिपि और व्याकरण

(क) 1. स्वयं कीजिए। 2. व्याकरण हमें भाषा के शुद्ध और मानक रूप का ज्ञान कराता है।

(ख) 1. द 2. य 3. र 4. स 5. ब 6. अ **(ग)** 1.

चीन-चीनी, रूस-रूसी, इंग्लैंड-अंग्रेजी, फ्रांस-फ्रांसीसी, भारत-हिंदी, जापान-जापानी

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

2. वर्ण विचार

(क) 1. भाषा की वह छोटी से छोटी ध्वनि, जिसके टुकड़े न किए जा सकें, वर्ण कहलाती है। 2. वर्ण के दो भेद हैं- स्वर तथा व्यंजन। **(ख)** 1. र् + उ + प् + अ + य + आ। 2. क् + य् + आ + र् + ई। 3. अ + न् + उ + श् + आ + स् + अ + न् + अ। 4. प् + उ + स् + त् + अ + क् + अ। 5. स् + ओ + न् + आ। **(ग)**, **(घ)** स्वयं कीजिए।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

3. संज्ञा

(क) 1. किसी प्राणी, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। 2. किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम का बोध कराने वाले शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते है; जैसे- दिल्ली, महात्मा गांधी आदि। 3. कुछ शब्द जाति विशेष को प्रकट करते हैं अर्थात् उस जाति के सभी लोगों के लिए प्रयुक्त होते हैं, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहा जाता है; जैसे- नदी, लड़का, आदि। 4. भाव, गुण, दशा, अवस्था आदि का बोध कराने वाले शब्द भाववाचक संज्ञा कहलाते हैं; जैसे- वीरता, बुढ़ापा आदि। **(ख)** **व्यक्तिवाचक संज्ञा**- महाभारत, चन्द्रगुप्त, ताजमहल, चेन्नई, गंगा।

जातिवाचक संज्ञा- स्कूल, फूल, शेर, मित्र, गधा।

भाववाचक संज्ञा- मिठास, शत्रुता, बुढ़ापा, अपनापन, बदसूरती **(ग)** 1. बुढ़ापा 2. स्वत्व 3. थकावट 4. बचपन 5. सजावट 6. लड़कपन 7. मनुष्यता 8. मूर्खता 9. मातृत्व 10. मोटापा।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

4. लिंग

(क) 1. शब्द का वह रूप जो स्त्री या पुरुष जाति का बोध कराए, लिंग कहलाता है; जैसे- लड़का-लड़की, माली-मालिन आदि। 2. लिंग दो प्रकार के होते हैं- स्त्रीलिंग, पुल्लिंग

(ख) 1. नाना जी ने कहानी सुनाई। 2. पेड़ पर मोरनी बैठी है। 3. ऊँट उठकर चल दिया। 4. शेरनी जंगल में छुप गई। 5. कटोरा रखा है।

(ग) **स्त्रीलिंग**- 1, 5, 8 **पुल्लिंग**- 2, 3, 4, 6, 7

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

5. वचन

(क) संज्ञा शब्दों से वस्तुओं के जिस रूप से उनके एक या अनेक होने का बोध हो उसे वचन कहते हैं। इसके दो भेद हैं- एकवचन और बहुवचन।

(ख) **एकवचन**- कविता, वस्तु, पतंग, कुर्सी। **बहुवचन**- महिलाएँ, आँखें, चिड़ियाँ, गमले

(ग) 1. पुस्तकें 2. पतंगें 3. तोते 4. कहानियाँ

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

6. कारक

(क) वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम पदों का क्रिया से संबंध बताने वाले शब्द कारक कहलाते हैं।

(ख) 1. में, अधिकरण कारक 2. पर, अधिकरण कारक 3. ने, कर्ता कारक 4. का, संबंध कारक 5. के लिए, संप्रदान कारक 6. से, अपादान कारक 7. को, संप्रदान कारक 8. ने, कर्ता कारक

(ग) 1. राहुल को खाना दो। 2. हम रेलगाड़ी से दिल्ली गए। 3. खाना मेज पर रख दो। 4. रीना की दो बहनें हैं। 5. मैंने पुस्तक भाई के लिए खरीदी है। 6. कोयल पेड़ पर बैठी है। **(घ)** का, के साथ, की, के, की, के लिए, के साथ, का।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

7. सर्वनाम

(क) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं; जैसे- मैं, तुम, वह आदि। 2. उत्तम पुरुष- मैं (बोलने वाला), मध्यम पुरुष- तुम (सुनने वाला), अन्य पुरुष- वह (जिसके बारे में बात की जाए)

(ख) 1. स्वयं, निजवाचक, हमें, पुरुषवाचक 2. कौन, प्रश्नवाचक 3. वह, निश्चयवाचक 4. जैसा वैसा संबंध वाचक 5. कुछ, अनिश्चयवाचक 6. खुद, निजवाचक 7. जो, वह, संबंध वाचक सर्वनाम 8. कोई, अनिश्चयवाचक सर्वनाम।

(ग) 1. मुझे अभी जाना है। 2. उसने रेल पकड़ ली। 3. उसका घर मेरे घर के पास है। 4. आप कहाँ से आ रहे हैं? 5. किसी को दादी की चिंता नहीं है। 6. दूध में कुछ गिर गया है।

(घ) उसने, अपने, उसके, वह, उसने, सबने

(ङ) 1. पुरुषवाचक 2. संबंधवाचक 3. अनिश्चयवाचक 4. निजवाचक 5. पुरुषवाचक

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

8. विशेषण

(क) 1. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं; जैसे- लाल कपड़ा, पीला फूल आदि। 2. विशेषण के चार भेद हैं- (i) गुणवाचक विशेषण- अच्छा, सुन्दर आदि। (ii) संख्यावाचक विशेषण- चार गिलास। (iii) परिमाण वाचक विशेषण- थोड़ा दूध। (iv) सार्वनामिक विशेषण- यह मेज। **(ख)** 1. मीठे-गुणवाचक विशेषण 2. लम्बा, होशियार, गुणवाचक विशेषण 3. सफेद-गुणवाचक विशेषण 4. गोल-गुणवाचक विशेषण 5. तीन-संख्यावाचक विशेषण। 6. थोड़ा-परिणामवाचक विशेषण 7. चार- संख्यावाचक 8. नटखट- गुणवाचक **(ग)** गर्म-चाय, दयालु-आदमी, गहरी-नदी, काला-कौआ, रंग-बिरंगी -तितली। **(घ)** 1. दयालु 2. रंगीन 3. घरेलू 4. चमकीला 5. ज्ञानी

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

9. क्रिया और काल

(क) 1. जिन शब्दों से किसी काम के करने या होने का पता चले, उन्हें क्रिया कहते हैं; जैसे- जाना, आना, खाना आदि। 2. क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं; जैसे- खा, पी, सो आदि। 3. जिन वाक्यों में कर्म होता है उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं। और जिन वाक्यों में कर्म नहीं होता उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं। 4. क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का ज्ञान होता है, उसे काल कहते हैं। इसके तीन भेद हैं- भूतकाल, वर्तमान काल, भविष्यत् काल। **(ख)** 1. खाती हैं। 2. पहने। 3. बनाया। 4. होगी। 5. गिरी है।

(ग) 1. सकर्मक 2. अकर्मक 3. अकर्मक 4. सकर्मक 5. सकर्मक।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

10. अविकारी शब्द

1. क्रियाविशेषण

(क) 1. क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे- तेज चलना 2. क्रियाविशेषण के चार भेद हैं- (i) कालवाचक क्रियाविशेषण (ii) रीतिवाचक क्रियाविशेषण (iii) स्थानवाचक क्रियाविशेषण (iv) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण **(ख)** 1. धीरे-धीरे 2. कल 3. ध्यानपूर्वक 4. कम 5. अचानक **(ग)** 1. तेज 2. बहुत 3. दूर 4. कल 5. जोर से **(घ)** 1. धीरे-धीरे 2. कल 3. इधर, 4. थोड़ा, 5. परसों

2. संबंधबोधक

(क) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के बाद लगकर उनका संबंध को वाक्य में प्रयुक्त अन्य शब्दों के साथ जोड़ते हैं, उन्हें संबंधबोधक कहते हैं। **(ख)** 1. के कारण 2. के लिए 3. के नीचे 4. के पास 5. के साथ **(ग)** के पास, के अंदर, के पीछे, के आगे, के अंदर, के ऊपर

3. समुच्चयबोधक

(क) दो शब्दों, वाक्यों या वाक्यांशों को परस्पर जोड़ने वाले शब्द योजक या समुच्चयबोधक कहलाते हैं। **(ख)** 1. अन्यथा 2. किन्तु 3. इसलिए 4. क्योंकि 5. इसलिए **(ग)** 1. वह गया था लेकिन काम नहीं हुआ। 2. मैं पास हुआ क्योंकि मैं पढ़ता था। 3. वह बुद्धिमान है अर्थात् उसमें बुद्धि है। 4. मैं गाना तो जानता हूँ किन्तु गा नहीं सकता। 5. वह घर जाना चाहता है इसलिए रो रहा है। 6. मैं जानता हूँ कि तुम बीमार हो।

4. विस्मयादिबोधक शब्द

(क) आश्चर्य, प्रसन्नता, हर्ष, शोक व घृणा आदि भावों को प्रकट करने वाले शब्दों को विस्मयादिबोधक शब्द कहते हैं; जैसे- अरे! ओह! आदि। **(ख)** 1. खबरदार 2. उफ 3. अरे 4. छिः छिः 5. शाबाश **(ग)** 1. हाय! ये क्या हो गया? 2. शाबाश! तुम जीत गए। 3. अरे! तुम यहाँ हो? 4. काश! मैं खिलाड़ी होता। 5. उफ! मैं तो परेशान हो गया। 6. वाह! क्या बात है। **(घ)** 1. अरे 2. ओह 3. उफ 4. शाबाश 5. काश

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

11. वाक्य-रचना

(क) 1. शब्दों का वह समूह जो एक निश्चित अर्थ दे, वाक्य कहलाता है। 2. वाक्य के दो अंग हैं, उद्देश्य और विधेय। **(ख)** 1. बस में बहुत भीड़

थी। 2. मैंने कल गाना सुनाया था। 3. अरे! यह तो साँप है। 4. आप कहाँ जा रहे हैं? 5. वह नाव में बैठ गया था। **(ग)** 1. राजीव – ने दरवाजा खोला। 2. बिल्ली – ने चूहा मार दिया। 3. पिताजी – मेरे लिए घड़ी लाए। 4. हमने – फिल्म देखी। 5. श्याम – ने घुड़सवारी की। **(घ)** 1. निकलता है 2. होती हैं 3. हो जाता है 4. जाएँगे 5. करता है। **(ङ)** 2. नीता फल खाती है 3. दर्जी ने कमीज सिली। 4. धोबी ने कपड़े धोए। 5. माँ ने खाना बनाया। 6. सुरेश स्कूल जाता है।

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

12. विराम-चिह्न

(क) 1. विराम को दर्शाने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, वे विराम-चिह्न कहलाते हैं। 2. पूर्ण विराम, प्रश्नवाचक, अल्पविराम, विस्मयादिबोधक, योजक चिह्न आदि।

(ख) स्वयं कीजिए। **(ग)** 1. अध्यापिका पढ़ा रही हैं। 2. मुझे केला, सेब, आम सभी फल पसंद है। 3. माँ बच्चे को सुला रही है। 4. हे राम! मेरी रक्षा करो। 5. सुख-दु:ख जीवन के दो पहिए हैं। 6. इस डिब्बे में क्या है? 7. अरे! तुमने यह क्या किया। 8. दरवाजा कौन खटखटा रहा है? 9. गौरव अच्छा बच्चा है। 10. वाह! कितना सुहावना दृश्य है।

(घ) प्रश्नवाचक (?), विस्मयादिबोधक (!), अल्पविराम (,), उद्धरण (“ ”)

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

13. उपसर्ग और प्रत्यय

(क) 1. जो शब्दांश मूल शब्दों के शुरू में जुड़कर नया शब्द बनाते हैं तथा शब्द के अर्थ में परिवर्तन आता है, उन्हें उपसर्ग कहते हैं; जैसे- सु+पुत्र = सुपुत्र। 2. जो शब्दांश मूल शब्दों के अंत में जुड़कर नया शब्द बनाते हैं तथा उनके जुड़ने से शब्द के अर्थ में परिवर्तन आता है, उन्हें प्रत्यय कहते है; जैसे- मित्र + ता = मित्रता **(ख)** 1. सुपुत्र 2. अपमान 3. अधखिला 4. असत्य 5. प्रतिदिन 6. पराजय 7. सजीव 8. अज्ञान 9. कुरूप 10. प्रगति **(ग)** 1. बुढ़ापा 2. भारतीय 3. बचपन 4. निपुणता 5. सफलता 6. समझदार 7. थकावट 8. सरलता

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

14. शब्द-भंडार

(क) 1. समान अर्थ देने वाले शब्दों को ही पर्यायवाची शब्द कहते हैं। 2. विपरीत अर्थ देने वाले शब्द विपरीतार्थक या विलोम शब्द कहलाते हैं। 3. जब एक शब्द से पूरे वाक्य या पूरी बात का ज्ञान हो, तब उसे 'अनेक शब्दों के लिए एक शब्द' कहा जाता है। **(ख)** 1. पहाड़, भूधर, नग 2. पेड़, तरु, पादप 3. हस्ती, गज, दंती 4. नेत्र, नयन, चक्षु 5. गृह, निकेतन, सदन **(ग)** 1. स 2. द 3. य 4. अ 5. ब **(घ)** 1. शत्रु 2. हार 3. अस्त 4. नई 5. उजाला

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

15. मुहावरे व लोकोक्तियाँ

(क) 1. मुहावरा- जब कोई वाक्य या वाक्यांश सामान्य अर्थ न देकर विशेष अर्थ में प्रयुक्त होने लगता है, तब वह मुहावरा कहलाता है।

2. लोकोक्ति- लोक जीवन के अनुभवों को सामान्य शब्दों में व्यक्त करती बात लोकोक्ति कहलाती है। **(ख)** 1. मुँह में पानी 2. आँखों में धूल झोंककर 3. फूला न समाया 4. हवा से बातें करता था। 5. पीठ थपथपाई। **(ग)** 1. ब 2. र 3. य 4. स 5. द 6. ल 7. व 8. अ

आओ दोहराएँ: स्वयं कीजिए।

दीपिका व्याकरण-6

1. भाषा, लिपि एवं वर्तनी

1. (क) भाषा के द्वारा ही मनुष्य अपने भावों और विचारों को प्रकट करता है तथा दूसरों के भावों और विचारों को समझता है। (ख) भाषा के दो रूप हैं- मौखिक और लिखित

(ग) भाषा के अंग हैं। (घ) दो व्यंजनों के मेल से जो आकृति बनती है, उसे संयुक्ताक्षर कहते हैं। (ङ) भाषा को लिखने का ढ़ंग लिपि कहलाता है। **2.** (क) कवर्ग (ख) पवर्ग (ग) पवर्ग (घ) टवर्ग (ङ) तवर्ग (च) पवर्ग (छ) चवर्ग (ज) कवर्ग (झ) चवर्ग (ड) भाषा को लिखने का ढंग लिपि कहलाता है। **3.** (क) देवनागरी (ख) देवनागरी (ग) गुरमुखी (घ) देवनागरी (ङ) फारसी

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

2. वर्ण-विचार

1. (क) वर्ण (ख) किसी भी भाषा में वर्णों का समूह वर्णमाला कहलाता है। हिंदी वर्णमाला में कुल 48 वर्ण हैं। (ग) जिन वर्णों को बोलने में अन्य किसी ध्वनि का सहारा नहीं लेना पड़ता, उन्हें स्वर कहते हैं। स्वरों के तीन भेद हैं– 1. ह्रस्व स्वर 2. दीर्घ स्वर 3. प्लुत स्वर **2.** (क) वर्ण (ख) टुकड़े (ग) 11, 33 (घ) संयुक्त व्यंजन (ङ) द्वित्व व्यंजन **3.** (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✗

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

3. शब्द-रचना

1. (क) जो शब्दांश मूल शब्दों से पहले लगकर उनके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देते हैं, इन्हें उपसर्ग कहते हैं; जैसे- अधमरा, कुपुत्र, अवगुण आदि। (ख) जो शब्दांश मूल शब्दों के अंत में लगकर उनके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता उत्पन्न कर देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे- सफलता, मोरनी, लंबाई आदि। (ग) दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बनने वाले सार्थक शब्दों की प्रक्रिया को समास कहते हैं। समास के छः भेद हैं– अव्ययीभाव समास, तत्पुरुष समास, कर्मधारय समास, द्विगु समास, द्वंद्व समास और बहुव्रीहि समास। (घ) सामासिक पद में पहले भाग को 'पूर्वपद' तथा दूसरे भाग को 'उत्तर पद' कहते हैं। **2.** (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✓ **3.** (क) अनुरूप, अनुसार (ख) उपयोग, उपहास (ग) प्रदेश, प्रयोग (घ) स्वदेश, स्वकर्म **4.** (क) बाजीगर (ख) फलवाला (ग) गहराई (घ) सिलाई, (ङ) मिठास (च) चमकीला (छ) बचपन (ज) गुणवान। **5.** (क) स (ख) द (ग) अ (घ) ब

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

4. संधि

1. (क) निकटतम वर्णों के मेल से होने वाले परिवर्तन को संधि कहते है; जैसे- हिम + आलय = हिमालय। (ख) संधि के तीन भेद हैं- स्वर संधि, व्यंजन, संधि और विसर्ग संधि (ग) संधि के नियमानुसार मिले हुए वर्णों को अलग-अलग कर दिया जाए तो यह प्रक्रिया 'संधि-विच्छेद' कहलाती है; जैसे- विद्यालय = विद्या + आलय **2.** (क) राजेंद्र (ख) सूर्योदय (ग) रवींद्र (घ) नारीश्वर (ङ) देवर्षि (च) महोदय **3.** (क) विद्या + आलय (ख) संग्रह + आलय (ग) महा + ऋषि (घ) सु + उक्ति (ङ) सुर + इंद्र (च) शची + इंद्र (छ) सर्व + उच्च (ज) कपि + ईश **4.** (क) देखो! सूर्योदय हो गया। (ख) लगता है, आज महोत्सव है। (ग) इस कार्य को नियमानुसार निपटा लीजिए। (घ) मनुष्य में परोपकार की भवना होनी चाहिए।

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

5. शब्द-भेद

1. (क) वर्णों को सही क्रम में लिखने से शब्द बनते हैं। (ख) वर्णो से निर्मित स्वतंत्र व सार्थक ध्वनि समूह शब्द कहलाती है। (ग) शब्द के चार भेद हैं- 1. उद्गम के आधार पर 2. रचना के आधार पर 3. अर्थ के आधार पर 4. प्रयोग के आधार पर। (घ) उद्गम के आधार पर शब्द चार प्रकार के होते हैं। तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी। **2.** (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓ **3.** (क) स (ख) द (ग) य (घ) अ (ङ) ब

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

6. शब्द-भंडार

1. (क) जो शब्द समान अर्थ प्रकट करते हैं, पर्यायवाची या समानार्थी शब्द कहलाते हैं। (ख) विपरीत अर्थ देने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं; जैसे- उल्टा-सीधा, ऊपर - नीचे आदि। (ग) अनेक शब्दों के स्थान पर जब एक शब्द पूरा अर्थ देता है उसे अनेक शब्दों के लिए एक शब्द कहते हैं। (घ) सुनने में लगभग समान लगने वाले शब्द, जिनका अर्थ भिन्न होता है, समश्रुत भिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं। **2.** (क) जल (ख) कमल (ग) कपड़े (घ) बादल (ङ) आँख **3.** (क) रंक (ख) शाप (ग) सेवक (घ) मधुर (ङ) प्रकाश **4.** (क) ब (ख) अ (ग) द (घ) स **5.** (क) अ (ख) ब (ग) स (घ) अ (ङ) ब

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

7. शब्दकोश देखना

1. (क) शब्द देखने के लिए कोश के क्रम को जानना आवश्यक होता है। (ख) कोश में शब्दों के

अर्थ ही .... सकर्मक क्रिया। **2.** स्वयं कीजिए। **3.** स्वयं कीजिए। **4.** (क) क्रिया (ख) स्त्रीलिंग (ग) संस्कृत मूल का (तत्सम) शब्द (घ) उपसर्ग (ङ) विशेषण (च) पुल्लिंग (छ) अव्यय

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

8. संज्ञा

1. (क) किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव या अवस्था के नाम को संज्ञा कहते हैं- जैसे- रमेश, दिल्ली, मेज, खुशी आदि। (ख) संज्ञा के तीन भेद हैं- व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, भाववाचक संज्ञा। **2.** (क) संज्ञा (ख) तीन (ग) व्यक्तिवाचक संज्ञा (घ) भावों (ङ) एक ही

3. (क) बचपन (ख) निर्धनता (ग) कूद (घ) अपनत्व (ङ) कड़वापन (च) शीघ्रता (छ) डकैती (ज) सेवा **4.** (क) द (ख) य (ग) स (घ) ब (ङ) अ **5.** (क) मानव (ख) गुरु (ग) देव (घ) मजदूर (ङ) इंसान (च) माता (छ) चोर (ज) शिशु

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

9. संज्ञा के विकार

1. (क) लिंग, वचन और काल के द्वारा होने वाले परिवर्तन को संज्ञा के विकार कहते हैं। (ख) लिंग के दो भेद हैं- पुल्लिंग, स्त्रीलिंग (ग) शब्द के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं, जैसे- तितली, तितलियाँ। वचन के दो भेद हैं- एकवचन, बहुवचन। (घ) संज्ञा या सर्वनाम शब्दों को क्रिया से जोड़ने वाले शब्दों को कारक कहते हैं; जैसे- राम ने रावण को मारा। कारक के आठ भेद हैं- कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण, संबोधन। (ङ) वाक्य में जिस पर क्रिया का फल पड़े उसे कर्म कारक कहते हैं तथा किसी के लिए कुछ किया जाए उसे संप्रदान कारक कहते हैं। क्रिया करने का साधन या माध्यम करण कारक होता है जबकि अपादान अलग होने का भाव प्रकट करता है।

2. (क)मेरी माताजी लेखिका हैं। (ख) हमारी नौकरानी छुट्टी पर गई है। (ग) अध्यापिका छात्रों को पढ़ा रही हैं। (घ) शेरनी हिरनों के पीछे भाग रही है। **3.** (क) सेठानी, नौकरानी, देवरानी (ख) बिटिया, चिड़िया, बुढ़िया (ग) पंडिताइन, ठकुराइन, चौबाइन (घ) हथिनी, मोरनी, ऊँटनी (ङ) नाइन, सुनारिन, लुहारिन **4.** (क) युवती, बादशाह, राजा (ख) स्वामिनी, कवयित्री, नर (ग) स्त्री, विधवा, बैल **5.** (क) ऋतुएँ (ख) खिड़की (ग) टोकरी (घ) पौधे (ङ) कमरों **6.** (क) एकवचन (ख) बहुवचन (ग) बहुवचन (घ) बहुवचन (ङ) एकवचन **7.** (क) नदियों का पानी साफ है। (ख) पेड़ों से पत्ते गिरे। (ग) अध्यापकगण बच्चों को पढ़ा रहे हैं। (घ) खिड़कियों से हवा आ रही है। **8.** (क) मित्रगण (ख) छात्रवृंद (ग) गायकवृंद (घ) मजदूर लोग (ङ) संतजन (च) नेतागण **9.** (क) की (ख) से (ग) के लिए (घ) के साथ (ङ) को **10.** (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

10. सर्वनाम

1. (क) जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं उन्हें सर्वनाम कहते हैं; जैसे- मैं, तुम, वह, आदि। (ख) सर्वनाम के छः भेद हैं- पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, संबंधवाचक, निजवाचक। **2.** (क) आप (पुरुषवाचक) (ख) जो, उसे (संबंधवाचक)(ग) कौन (प्रश्नवाचक) (घ) कोई (अनिश्चयवाचक) (ङ) अपना, स्वयं (निजवाचक) (च) मैं (पुरुषवाचक) **3.** (क) वह (ख) कुछ (ग) किसके (घ) हमें (ङ) वह

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

11. विशेषण

1. (क) संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। (ख) विशेषण के चार भेद हैं- गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक, सार्वनामिक (ग) विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं- मूलावस्था, उत्तरावस्था, उत्तमावस्था। (घ) विशेषण शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द प्रविशेषण कहलाते हैं। **2.** (क) जिन विशेषण शब्दों से निश्चित संख्या का बोध होता है, उन्हें निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे- पाँच मछलियाँ। जिन विशेषण शब्दों से अनिश्चित संख्या का बोध होता है, उन्हें अनिश्चित

संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे– कम छाव (ख) संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयोग होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे– वह। तथा संज्ञा से पहले आकर उसकी विशेषता बताने वाले सर्वनाम शब्द सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं; जैसे– वह लड़की (ग) संज्ञा शब्दों की मापतोल बताने वाले शब्द परिमाणवाचक कहलाते है; जैसे– पाँच किलो चीनी। तथा संख्या बताने वाले शब्द संख्या वाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे– दो कौए। **3.** (क) वार्षिक (ख) बुद्धिमान (ग) स्वादिष्ट (घ) भारतीय (ङ) शौकीन **4. विशेषण**– (क) मनोहर (ख) बड़ा (ग) ठंड (घ) बूढ़े (ङ) लंबा। **प्रविशेषण**– (क) अत्यन्त (ख) अधिक (ग) काफी (घ) अत्यन्त (ङ) बहुत। **5.** (क) तीव्रतर, तीव्रतम (ख) श्रेष्ठतर, श्रेष्ठतम (ग) उच्चतर, उच्चतम (घ) अधिक लंबा, सबसे लंबा (ङ) अधिकतर, अधिकतम।

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

12. क्रिया और काल

1. (क) जिन शब्दों से किसी काम के करने या होने का पता चलता है उन्हें क्रिया कहते हैं जैसे– जाना, खेलना, पढ़ना आदि। (ख) कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं– सकर्मक क्रिया, अकर्मक क्रिया। (ग) रचना के आधार पर क्रिया के पाँच भेद हैं– सामान्य क्रिया, संयुक्त क्रिया, नामधातु क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया, पूर्वकालिक क्रिया (घ) क्रिया के होने या करने के समय को काल कहते हैं। काल के तीन भेद होते हैं– भूतकाल, वर्तमान काल, भविष्यत् काल **2.** (क) वह पढ़कर खेलने चला गया। (ख) अस्तबल में घोड़ा हिनहिना रहा था। (ग) तुम मेरे घर चलो। (घ) आसमान में सूरज निकल आया है। (ङ) पापा ने मुझसे साइकिल चलवाई। **3.** (क) भूतकाल (ख) भविष्यत्काल (ग) वर्तमान काल (घ) भविष्यत् काल (ङ) भूतकाल

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

13. अविकारी शब्द

1. (क) जिन शब्दों के रूप लिंग, वचन और काल के कारण नहीं बदलते है, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं; जैसे– देर से, जल्दी–जल्दी, बहुत से, के कारण आदि। (ख) अविकारी शब्दों के पाँच भेद हैं– क्रियाविशेषण, संबंधबोधाक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक और निपात।

2. (क) और (ख) वाह (ग) भी (घ) के पीछे (ङ) तेजी से **3. क्रियाविशेषण** – धीरे, बहुत, **संबंधबोधक** – में, के पीछे, **समुच्चयबोधक** – परन्तु, लेकिन **विस्मयादिबोधक** – बाप रे!, ओह!

4. स्वयं कीजिए।

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

14. वाच्य

1. (क) क्रिया का वह रूप जिससे यह पता चले कि वाक्य में क्रिया द्वारा किए गए कर्म का मुख्य विषय कर्ता, कर्म या भाव में से क्या है, वाच्य कहलाता है। (ख) क्रिया के जिस रूप में कर्ता की प्रधनाता होती है तथा वाक्य की क्रिया कर्ता के लिंग, वचन आदि के अनुसार ही प्रयोग की जाती है। (ग) क्रिया के जिस रूप में कर्म की प्रधानता हो तथा वाक्य में क्रिया कर्म के लिंग, वचन आदि के अनुसार ही प्रयोग की जाती है, उसे कर्मवाच्य तथा जिस वाक्य में क्रिया का संबंध न तो वाक्य में प्रयुक्त कर्ता से होता है, न कर्म से बल्कि ये क्रिया के भाव के आधार पर होती है, उसे भाववाच्य कहते हैं। **2.** (क) भाववाच्य (ख) भाववाच्य (ग) कर्तृवाच्य (घ) कर्तृवाच्य (ङ) कर्मवाच्य **3.** (क) बढ़ई द्वारा लकड़ी काटी जाती है। (ख) कनिका द्वारा फूल तोड़ा जाता है। (ग) मेरे द्वारा प्रतिदिन दूध पिया जाता है। (घ) पुलिस द्वारा चोर को पकड़ा जाता है। (ङ) राम द्वारा झूठ नहीं बोला जाता है। **4.** (क) मुझसे चला नहीं जाता। (ख) बच्चे से खेला जा रहा है। (ग) लीला से सोया नहीं जा रहा है। (घ) मौसी से खाना नहीं बनाया जाता। (ङ) माँ से बाजार नहीं जाया जा सकता। (च) गोपाल से पढ़ा जा रहा है। (छ) कुत्ते के द्वारा भौंका जाता है।

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

15. वाक्य

1. (क) शब्दों के सार्थक, क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित ढंग से प्रयुक्त समूह को वाक्य कहते हैं, जैसे– मैं जा रहा हूँ। (ख) वाक्य के दो अंग हैं– उद्देश्य और विधेय। (ग) अर्थ के आधार पर वाक्य

के आठ भेद हैं- विधानवाचक वाक्य, निषेधवाचक वाक्य, प्रश्नवाचक वाक्य, विस्मयाबोधक वाक्य, आज्ञासूचक वाक्य, इच्छासूचक वाक्य, संदेहवाचक वाक्य, संकेतवाचक वाक्य (घ) रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं- सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य, मिश्रित वाक्य। **2.** (क) वाक्य (ख) उद्देश्य (ग) विधेय (घ) विस्मयादिबोधक (ङ) आश्रित उपवाक्य **3.** (क) क्या बच्चों ने सुंदर चित्र बनाए? (ख) हम उधर से नहीं जा सकते हैं। (ग) लगता है, वह काम करेगा। (घ) तुम पढ़ो (ङ) ईश्वर करे, तुम परीक्षा में पास हो जाओ।

गतिविधिः स्वयं कीजिए।

16. विराम-चिह्न

1. लिखते समय वाक्य के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए जो चिह्न लगाए जाते हैं उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं; जैसे- वह जाता है। ओह! मैं गिर गया। **2.** (क) विराम (ख) प्रश्नसूचक (ग) निर्देशक (घ) उद्धरण (ङ) विराम-चिह्न **3.** (क) वह क्या कर रहा है? (ख) शाबाश! कितना अच्छा खेले हो। (ग) राम ने कहा, "मैं कल खेलूँगा।" (घ) प्रो. शर्मा हमें हिन्दी पढ़ाते हैं। (ङ) मैं कभी-कभी वहाँ जाता हूँ। **4.** (क) स (ख) द (ग) य (घ) र (ङ) अ (च) ब **5.** (क) तुम कहाँ जा रहे हो? (ख) डॉ० शर्मा यहाँ रहते हैं। (ग) 'कबीर दास' हिंदी के प्रमुख कवि थे। (घ) शीला, मीरा और रमा स्कूल गई। (ङ) मैं कल बाजार गया था।

गतिविधिः स्वयं कीजिए।

17. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

1. (क) जो वाक्यांश सामान्य अर्थ न देकर विशेष अर्थ देते हैं, मुहावरे कहलाते हैं जैसे- आँख का तारा-बहुत प्यारा। (ख) लोकोक्ति दो शब्दों से मिलकर बना है लोक + उक्ति अर्थात् लोक में प्रचलित बात, जैसे- आम के आम गुठलियों के दाम। (ग) मुहावरे वाक्य का हिस्सा होते हैं, जबकि लोकोक्ति स्वतंत्र पूर्ण वाक्य होती हैं। **2.** (क) आँख का तारा (ख) आँख दिखाना (ग) आँखें फेरना (घ) काला अक्षर भैंस बराबर (ङ) चिकना घड़ा **3.** (क) स (ख) द (ग) य (घ) अ (ङ) ब **4.** (क) अनपढ़, वह कुछ नहीं समझेगा, उसके लिए काला अक्षर भैंस बराबर है। (ख) जरूरत से कम देना, पहलवान के लिए इतना सा भोजन, यह तो ऊँट के मुँह में जीरा है। (ग) कर्म के अनुसार फल मिलना, कल तक वह दूसरों को उल्लू बनाता था आज खुद बन गया। सही कहा गया है, जैसी करनी वैसी भरनी। (घ) जानबूझकर मुसीबत मोल लेना, वह रोज कुत्ते को छेड़ता था आज उसने काट ही लिया। वही बात हुई कि आ बैल मुझे मार। (ङ) एक दोष के साथ दूसरा भी आ जाना, मोहन का भाई सिगरेट पीता था, अब जुआ भी खेलने लगा, इसे कहते है एक करेला दूजा नीम चढ़ा।

गतिविधिः स्वयं कीजिए।

18. अलंकार

1. (क) कविता के सौंदर्य में वृद्धि करने के लिए शब्दों या अर्थों के माध्यम से जो चमत्कार उत्पन्न होता है, उसे अलंकार कहते हैं। (ख)अलंकार के दो भेद हैं- शब्दालंकार, अर्थालंकार। (ग) शब्दालंकार के तीन भेद हैं- अनुप्रास अलंकार, यमक अलंकार, श्लेष अलंकार (घ) अर्थालंकार के चार भेद हैं- उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति। (ङ) स्वयं कीजिए। **2.** (क) अलंकार (ख) दो, अर्थालंकार (ग) अनुप्रास (घ) अतिशयोक्ति (ङ) चार। **3.** (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓ **4.** शब्दालंकार- अनुप्रास यमक, श्लेष। अर्थालंकार- उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति।

गतिविधिः स्वयं कीजिए।

दीपिका व्याकरण-7

1. भाषा, लिपि और व्याकरण

1. (क) अपने मन के भावों और विचारों को व्यक्त करना तथा दूसरों के मन के भावों और विचारों को जानने का माध्यम ही भाषा कहलाता है।

(ख) संविधान में 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। दस भाषाएँ- हिन्दी, मराठी, नेपाली, कोंकणी, मणिपुरी, तमिल, मलयालम, पंजाबी, तेलुगु, बांग्ला (ग) भाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है परन्तु बोली सीमित क्षेत्र में बोली जाती है। (घ) राजभाषा का अर्थ है- सरकारी भाषा; अर्थात् जिस भाषा में किसी देश के सभी सरकारी कार्य किए जाएँ। (ङ) हिंदी

भाषा की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं– इस भाषा में जो बोला .... संप्रेषण का माध्यम है।
2. (क) दो, लिखित (ख) अंग्रेजी (ग) प्रथम (घ) हिंदी दिवस (ङ) राजभाषा
3. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓
4. स्वयं कीजिए।
गतिविधि: स्वयं कीजिए।

2. वर्ण-विचार

1. (क) हिन्दी वर्णमाला में कुल 48 वर्ण हैं। (ख) जिन वर्णों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से बिना किसी अन्य वर्णों की सहायता से किया जाता है, वे स्वर कहलाते हैं। (ग) दो व्यंजनों के संयोग से बने वर्ण को संयुक्त व्यंजन कहते हैं; जैसे– क्ष, त्र, ज्ञ, श्र। (घ) हिन्दी भाषा में अन्य भाषाओं से आए हुए वर्णों को आगत स्वर कहते हैं; जैसे ऑ, फ़, ख़, ज़। **2.** (क) दो (ख) अनुस्वार (ग) आगत (घ) द्वित्त्व (ङ) अनुनासिक, विसर्ग (च) अयोगवाह **3.** (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓
4. (क) क्ष, क्षत्रिय, क्षमा (ख) ल्ल, बिल्ली, दिल्ली (ग) क्क, पक्का, सिक्का (घ) त्र, त्रिशूल, त्रिदेव (ङ) ज्ञ, ज्ञान, ज्ञाता। **5. अनुस्वार**– कलंक, मृदंग, पतंग, अंग। **अनुनासिक**– चाँद, आँगन, आँचल, आँख। **6.** स्वयं कीजिए।
गतिविधि: स्वयं कीजिए।

3. शब्द-रचना

1. (क) जो शब्दांश किसी मूल शब्द के आरंभ में जुड़कर उसका अर्थ बदल देते हैं उन्हें उपसर्ग कहते हैं; जैसे– कु + पुत्र = कुपुत्र, सु +पुत्र = सुपुत्र
(ख) जो शब्दांश किसी मूल शब्द के अंत में जुड़कर नया शब्द बनाते हैं व उसका अर्थ बदल देते है, उन्हें प्रत्यय कहते हैं। जैसे– थका + न = थकान, धन + वान = धनवान (ग) जब दो या दो से अधिक शब्दों के मिलने से एक अन्य सार्थक शब्द का निर्माण हो तो इस प्रक्रिया को समास कहते हैं। इसके छह भेद हैं– अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, द्वंदव, बहुव्रीहि। (घ) उपसर्ग ऐसे शब्दांश हैं जो मूल शब्द के प्रारंभ में लगते हैं जबकि प्रत्यय मूल शब्द के अन्त में लगते हैं। (ङ) दोनों शब्दांश मात्र हैं, दोनों का स्वतंत्र प्रयोग नहीं हो सकता।
2. (क) नवीनता (ख) उपसर्ग, प्रत्यय (ग) अस्तित्व (घ) संक्षिप्त करना (ङ) दो, उत्तरपद
3. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓ (च) ✓ **4.** (क) परिश्रम (ख) अधपका (ग) बेईमान (घ) दुर्बल (ङ) स्वदेश (च) प्रदेश
5. (क) चार मांसों का समूह, द्विगु समास (ख) पीला अंबर कर्मधारय समास (ग) गुण और दोष द्वंद्व समास (घ) शरण को आगत, तत्पुरूष समास (ङ) चन्द्रमा के समान मुख, कर्मधारय (च) तीन रंगों वाला है जो, बहुव्रीहि समास।
गतिविधि: स्वयं कीजिए।

4. संधि

1. (क) दो या दो से अधिक वर्णों के पारस्परिक मेल से जो परिवर्तन उत्पन्न होता है, उसे सन्धि कहते हैं। जैसे– विद्या + आलय = विद्यालय (ख) सन्धि के तीन भेद हैं– स्वर सन्धि, व्यंजन सन्धि, विसर्ग सन्धि (ग) दो स्वरों का परस्पर मेल स्वर संधि तथा एक व्यंजन या स्वर के दूसरे व्यंजन अथवा किसी स्वर के मेल से होने वाला परिवर्तन व्यंजन संधि कहलाता है। **2.** (क) वर्णों (ख) व्यंजन संधि, विसर्ग संधि (ग) सन्धि (घ) व्यंजनों, स्वरों (ङ) दिग्गज **3.** (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗ **4.** (क) सदैव (ख) रेखांकित (ग) नरेश (घ) परमाणु (ङ) गिरीश (च) सद्भावना (छ) सज्जन (ज) निरर्थक (झ) दिग्दर्शन (ञ) चंद्राणु **5.** (क) जीव + अणु (ख) नदी + ईश (ग) सुर + इन्द्र (घ) पुस्तक + आलय (ङ) महा + आत्मा (च) कवि + इन्द्र (छ) परि + ईक्षा (ज) पुरः + कार (झ) जगत् + नाथ (ञ) शची + इन्द्र
गतिविधि: स्वयं कीजिए।

5. शब्द-भंडार

1. (क) समान अर्थ देने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं जैसे– भूमि, भू, पृथ्वी। (ख) विपरीत अर्थ देने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं जैसे– सीधा–उल्टा **2.** (क) जो शब्द सुनने में एक जैसे लगे परंतु उनके अर्थ व वर्तनी में भिन्नता हों, समश्रुत भिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं। (ख) एक जैसे अर्थों वाले शब्दों को एकार्थी प्रतीत होने वाले शब्द कहते हैं। (ग) वाक्यांशों के स्थान पर प्रयुक्त एक

शब्द को अनेक शब्द के लिए एक शब्द कहते हैं। **3.** (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓ **4.** (क) ध्वज (ख) प्रेम (ग) कली (घ) ग्रन्थ (ङ) सहपाठी **5.** (क) सर्वज्ञ (ख) पर्यटक (ग) थलचर (घ) आज्ञाकारी (ङ) अमूल्य **6.** (क) मेहमान या अतिथि (ख) आँख (ग) दिन (घ) घोड़ा (ङ) नदी **7.** (क) द (ख) य (ग) अ (घ) ब (ङ) स

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

6. संज्ञा

1. (क) किसी प्राणी, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं; जैसे- राम, अलमारी, कानपुर, ईमानदारी आदि। (ख) भाववाचक संज्ञा पाँच प्रकार से बनती हैं- जातिवाचक संज्ञा से, सर्वनाम से, विशेषण से, क्रिया से, अव्यय से। **2.** (क) संज्ञा (ख) तीन (ग) भाववाचक (घ) व्यक्तिवाचक संज्ञा (ङ) जातिवाचक **3.** (क) मिठास (ख) कड़वाहट (ग) शीघ्रता (घ) आजाद (ङ) हरियाली

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

7. संज्ञा के विकार

1. (क) शब्द के जिस रूप से स्त्री या पुरुष जाति का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं- स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग। (ख) शब्द का वह रूप जो उसके एक या अनेक का बोध कराए, वचन कहलाता है; ये दो प्रकार के होते है एकवचन व बहुवचन जैसे- तारा-तारे, बच्चा-बच्चे। (ग) वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम को क्रिया से जोड़ने वाले शब्द कारक कहलाते हैं। ये आठ प्रकार के होते हैं कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण तथा संबोधन कारक। **2.** (क) पुल्लिंग (ख) स्त्रीलिंग (ग) एकवचन, बहुवचन (घ) कारक (ङ) अपादान **3.** (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗ **4.** (क) गुणवान (ख) जुलाहिन (ग) प्रबंधकर्ता (घ) वीरांगना (ङ) आयुष्मान (च) राजपूतानी (छ) साधु (ज) गायिका (झ) विद्वान (ञ) साम्राज्ञी **5.** (क) बहुवचन (ख) बहुवचन (ग) एकवचन (घ) एकवचन **6.** (क) संप्रदान कारक (ख) अपादान कारक (ग) अधिकरण कारक (घ) संबोधन कारक

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

8. सर्वनाम

1. (क) संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त किए जाने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं; जैसे- मैं, तुम, यह, वह आदि। (ख) सर्वनाम के छह भेद हैं- पुरुषवाचक सर्वनाम, निश्चयवाचक सर्वनाम, अनिश्चयवाचक सर्वनाम, निजवाचक सर्वनाम, प्रश्नवाचक सर्वनाम, संबंधवाचक सर्वनाम। **2.** (क) मेरी (ख) मुझसे (ग) मेरे (घ) हमें (ङ) उसे **3.** (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗ **4.** (क) तुम्हें किससे मिलना है? (ख) तुम किसका सामान लाए हो? (ग) आप अपने घर जाइए। (घ) तुम्हें सब्जी मैं लाकर दूँगा। (ङ) तुम अपने को क्या समझते हो?

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

9. विशेषण

1. (क) संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं, जैसे- अच्छा आदमी, सुंदर लड़की आदि। (ख) विशेषण जिन शब्दों की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेष्य कहते हैं, जैसे लाल पतंग में लाल विशेषण तथा पतंग विशेष्य है। (ग) विशेषण के पाँच भेद हैं- गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक, सार्वनामिक तथा व्यक्तिवाचक। (घ) विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं, 1. मूलावस्था, उत्तरावस्था और उत्तमावस्था (ङ) विशेषण की भी विशेषता बताने वाले शब्द प्रविशेषण कहलाते हैं; जैसे- 'बहुत लंबा लड़का' में 'बहुत' प्रविशेषण है। **2.** (क) संज्ञा, सर्वनाम (ख) प्रविशेषण (ग) उत्तमावस्था (घ) विशेष्य (ङ) पाँच **3.** (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓ **4.** (क) य (ख) र (ग) अ (घ) ब (ङ) स (च) द **5.** (क) अधिक ऊँचा, सबसे ऊँचा (ख) श्रेष्ठतर, श्रेष्ठतम (ग) मधुरतर, मधुरतम (घ) विशालतर, विशालतम (ङ) अधिक बुद्धिमान, सबसे बुद्धिमान

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

10. क्रिया और काल

1. (क) जिन शब्दों से किसी कार्य को करने या होने का बोध हो, उन्हें क्रिया कहते हैं; जैसे- चलना, फिरना आदि (ख) कर्म के आधार पर

क्रिया के दो भेद हैं- सकर्मक व अकर्मक (ग) रचना के आधार पर क्रिया के पाँच भेद हैं- सामान्य क्रिया, संयुक्त क्रिया, नामधातु क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया, पूर्वकालिक क्रिया। **(घ)** क्रिया के जिस रूप से उसके होने या करने का समय ज्ञात हो, उसे काल कहते हैं। काल के तीन भेद हैं- भूतकाल, वर्तमान काल, भविष्यत् काल

2. (क) क्रिया (ख) दो (ग) काल (घ) तीन (ङ) भविष्यत् **3.** (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗ (च) ✗

4. (क) देखती है (ख) धोती हैं (ग) खींचता है (घ) गाया (ङ) मँगवाया **5.** (क) भूतकाल, संदिग्ध भूतकाल (ख) वर्तमान काल, संदिग्ध वर्तमान (ग) भविष्यत् काल, सामान्य भविष्यत् (घ) भूतकाल, हेतु-हेतुमद भूतकाल (ङ) भूतकाल संदिग्ध भूतकाल

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

11. वाच्य

1. (क) क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा यह ज्ञात हो कि वाक्य क्रिया द्वारा किए गए कर्म का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है या भाव है, वाच्य कहलाता है। (ख) कर्तृवाच्य में कर्ता की प्रधानता होती है जैसे- लड़का किताब पढ़ रहा है परन्तु कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता होती है जैसे- पिताजी ने पुस्तकें खरीदीं। (ग) जिस वाक्य में क्रिया का संबंध न तो कर्ता से होता है न ही कर्म से बल्कि क्रिया के भाव से होता है वहाँ भाववाच्य होता है। **2.** (क) कर्म (ख) तीन (ग) सकर्मक (घ) अकर्मक (ङ) कर्ता **3.** (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗ **4.** (क) भाववाच्य (ख) कर्तृवाच्य (ग) कर्मवाच्य (घ) कर्मवाच्य **5.** (क) सुरेश द्वारा पाठ पढ़ा जा रहा है। (ख) मरीज से खाँसा नहीं जाता। (ग) धोबी द्वारा कपड़े धोए जा रहे हैं। (घ) बच्चा नहा रहा है।

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

12. अविकारी शब्द

1. (क) जिन शब्दों में काल, लिंग वचन के प्रभाव से परिवर्तन नहीं होते, उन्हें अविकारी शब्द या अव्यय कहते हैं; जैसे- धीरे-धीरे, परंतु, हाय! आदि (ख) क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को ही क्रिया विशेषण कहते हैं। इसके चार भेद है- कालवाचक स्थानवाचक, परिमाणवाचक, रीतिवाचक (ग) जिन शब्दों द्वारा संज्ञा या सर्वनाम शब्दों का संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से जाना जाए, उन्हें संबंधबोधक कहते हैं। (घ) वे शब्द जो विस्मय, हर्ष, शोक, आदि भावों को प्रकट करते हैं। उन्हें विस्मयादिबोधाक शब्द कहते हैं जैसे- हाय! अरे! ओह! आदि। **2.** (क) विकारी (ख) परिवर्तन (ग) चार (घ) संबंधबोधक (ङ) क्रियाविशेषण **3.** (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗ **4.** (क) संबंधबोधक (ख) क्रियाविशेषण (ग) संबंधबोधक (घ) संबंधबोधक (ङ) क्रियाविशेषण **5. समुच्चयबोधक**- यदि, तो, परंतु, यद्यपि-तथापि, फिर-भी, इसलिए, किंतु, अथवा, ताकि

विस्मयादिबोधक- आह, हाय, अहा, उफ, शाबाश, ओह, अरे, छी-छी, बाप रे, वाह

गतिविधि- स्वयं कीजिए।

13. वाक्य

1. (क) शब्दों के सार्थक, क्रमबद्ध, व्यवस्थित ढंग से प्रयुक्त समूह को वाक्य कहते हैं जैसे- मैं घर जा रहा हूँ। (ख) वाक्य के दो अंग है- उद्देश्य और विधेय। जैसे- राम ने खाना खाया। राम (उद्देश्य) ने खाना खाया (विधेय) **(ग)** अर्थ की दृष्टि से वाक्य के आठ भेद हैं- विधानवाचक, निषेधवाचक, प्रश्नवाचक, विस्मयादिबोधक, आज्ञावाचक, इच्छावाचक, संदेहवाचक, संकेतवाचक (घ) रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन भेद हैं- सरल, संयुक्त तथा मिश्रित। **2.** (क) वाक्य (ख) सरल (ग) उद्देश्य (घ) विधेय (ङ) आठ **3.** (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗ **4.** (क) सरल वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य (ग) मिश्रित वाक्य (घ) संयुक्त वाक्य (ङ) सरल वाक्य।

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

14. विराम-चिह्न

1. (क) वाक्य में कहाँ कितना रुकना है यह बोध हमें विराम चिह्नों से होता है। (ख) पूर्णविराम, अल्पविराम, उपविराम, प्रश्नसूचक, निर्देशक इत्यादि। **2.** (क) उद्धरण (ख) पूर्ण विराम (ग) विराम

चिह्न (घ) निर्देशक (ङ) उपविराम **3.** (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✓

4. (क) शाम ढल गई थी, सुमन ने 'बालहंस' पढ़ना शुरू किया। (ख) माँ ने पूछा, कि समय क्या हुआ है? (ग) हे ईश्वर! अब क्या होगा? (घ) नहीं, कश्मीर में तो शांति है। (ङ) डॉ० शर्मा मुझे अच्छे लगते हैं।

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

15. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

1. (क) भाषा को सरल, रोचक और प्रवाहमय बनाने के लिए भाषा में मुहावरों का प्रयोग किया जाता है। (ख) जब कोई वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ को प्रकट करता है, तो उसे मुहावरा कहते हैं जैसे– ''नौ दो ग्यारह होना'' अर्थात् भाग जाना। (ग) लोकोक्ति लोक में प्रचलित, सारगर्भित, संक्षिप्त, रसयुक्त तथा भूतकाल के अनुभवों का सार होती हैं; जैसे– ऊँची दुकान फीका पकवान अर्थात् दिखावा अधिक वास्तविकता कम (घ) मुहावरे स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं होते वे केवल वाक्यांश हैं। लोकोक्तियाँ पूर्ण वाक्य होती हैं तथा स्वतंत्र प्रयोग होती हैं। **2.** (क) कान पर जूँ तक न रेंगी (ख) घी के दीए जलाए (ग) दाल न गल सकी (घ) मुँह में राम बगल में छुरी (ङ) उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे। **3.** (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓ **4.** (क) रामू को कुछ समझ नहीं आता वह तो अक्ल का दुश्मन है। (ख) आजकल कुछ लोग काम नहीं करते सिर्फ अपना उल्लू सीधा करते हैं। (ग) चोरों ने पुलिस की आँखों में धूल झोंक दी और भाग गए। (घ) मजदूरों ने इस इमारत को बनाने में एड़ी चोटी का जोर लगा दिया। (ङ) तुम चाहे कितनी ही कोशिश कर लो, यहाँ तुम्हारी दाल नहीं गलेगी।

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

16. वाक्य रचना की अशुद्धियाँ

1. (क) सार्थक शब्दों का उचित क्रम वाक्य कहलाता है जैसे– 1. मैं घर जा रहा हूँ। 2. तुम कल रात कहाँ थे? (ख) वाक्य में अशुद्धियों के निम्नलिखित कारण है– (i) प्रसंग के अनुसार शब्दों का प्रयोग न होना। (ii) पदक्रम के नियमों का पालन न करना। (iii) अन्विति के नियमों की जानकारी का अभाव। (iv) व्याकरणिक नियमों की जानकारी का अभाव।

2. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✗

3. (क) उज्जवल (ख) अथिति (ग) विकास (घ) आर्शीवाद (ङ) श्रीमती (च) पूजनीय (छ) मुश्किल (ज) सीढ़ियाँ (झ) कल्याण (ञ) नाश **4.** (क) दो मामे (ख) टूट (ग) तेरे से (घ) श्रृद्धा करता (ङ) समझाने की कृपा करें। (च) मेरे को (छ) रेलगाड़ियाँ (ज) करिए **5.** (क) यहाँ मत बैठो। (ख) जाओ, मैं तुमसे नहीं बोलता। (ग) बच्चों को केक काटकर खिला दो। (घ) मैं शाम को घूमने जाता हूँ। (ङ) यह थैला बहुत भारी है। (च) दिल्ली में कई दर्शनीय स्थल हैं। (छ) सेब की एक पेटी ला दीजिए। (ज) उसके प्राण निकल गए।

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

17. शब्दकोश अवलोकन

1. (क) भाषा में प्रयुक्त असंख्य शब्दों को उनके अर्थ सहित एक ही पुस्तक में संग्रहित करना ही शब्दकोश कहलाता है। (ख) शब्द कोश के माध्यम से विद्यार्थी उन कठिन शब्दों के अर्थ जान लेते हैं जिन्हें उन्हें पढ़ने में कठिनाई पैदा करते हैं तथा उनके ज्ञान के वृद्धि होती है। (ग) शब्दकोश में अनुस्वार और अनुनासिक उसी वर्ण से पूर्व आते हैं जिन पर इनका प्रयोग हुआ है। जैसे खँ, खं, ख आदि।
(घ) मात्राओं का सही क्रम इस प्रकार हैं– ँ, ं
–, ि, ी, ु, ू, ृ, े, ै, ो, ौ

2. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✗

3. (क) कोष, गुनाह, दलील, दिव्य, निदान, भव्य, राकेश (ख) क्षत्रिय, छंद, छुटपुट, नैसर्गिक, मृगतष्णा, हँसना (ग) अर्थ, तहजीब, त्रिगुण, निर्मित, पुलकित, श्रमिक (घ) अंबर, चौकसी, जंगल, त्रिविध, पीर, याचना (ङ) अंक, उर्वरक, नेत्र, माया, लालसा, शतक

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

18. अलंकार

1. (क) कविता का सौन्दर्य बढ़ाने के लिए शब्दों या अर्थो के माध्यम से जो चमत्कार उत्पन्न होता है, उसे अलंकार कहते हैं। (ख) अलंकार के दो भेद

हैं।- शब्दालंकार और अर्थालंकार (ग) शब्दालंकार के तीन भेद हैं- अनुप्रास, यमक और श्लेष।

(घ) काव्य में जब शब्दों के अर्थ के स्तर पर चमत्कार उत्पन्न होता है तब अर्थालंकार होता है इसके चार भेद हैं- उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा तथा अतिशयोक्ति। **2.** (क) अलंकार (ख) दो (ग) श्लेष (घ) अतिशयोक्ति (ङ) उत्प्रेक्षा **3.** (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓ **4.** (क) शब्दों के कारण काव्य में जो चमत्कार उत्पन्न होता है उसे शब्दालंकार तथा शब्द के अर्थ के कारण उत्पन्न हुए चमत्कार को अर्थालंकार कहते हैं। (ख) अनुप्रास अलंकार में एक वर्ण की आवृत्ति बार-बार होती है जबकि यमक अलंकार में एक शब्द की आवृत्ति बार-बार होती है। (ग) उपमा अलंकार में दो वस्तुओं या व्यक्तियों की आपस में तुलना की जाती है जबकि उत्प्रेक्षा अलंकार में एक वस्तु में दूसरी की कल्पना की जाती है।

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

दीपिका व्याकरण-8

1. भाषा और व्याकरण

1. (क) भाषा विचारों के आदान-प्रदान का वह साधन है जो लिखने और बोलने के प्रयोग में लाया जाता है। (ख) भाषा का जो रूप किसी छोटे भू-भाग में बोला जाता है, उस स्थानीय रूप को बोली कहा जाता है। परंतु जब समय पाकर बोली का क्षेत्र विस्तृत हो जाता है और उसमें साहित्य की रचना भी होने लगती है तो बोली उपभाषा कहलाने लगती है। (ग) व्याकरण भाषा के नियमों का शास्त्र है जिसके द्वारा हमें भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान होता है। इसके तीन अंग हैं- वर्ण-विचार, शब्द-विचार, वाक्य-विचार

2. (क) भाषा (ख) हिंदी दिवस (ग) देवनागरी (घ) गुरमुखी (ङ) व्याकरण

3. (क) द (ख) ब (ग) स (घ) ब (ङ) अ (च) ब **4.** (क) ब (ख) स (ग) र (घ) य (ङ) अ (च) द

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

2. वर्ण-विचार

1. (क) भाषा की वह छोटी से छोटी ध्वनि, जिसके खंड न किए जा सकें, वर्ण कहलाती है। वर्ण के दो भेद हैं- स्वर और व्यंजन (ख) हिंदी वर्णमाला में कुल 48 वर्ण होते हैं। (ग) जो वर्ण अन्य भाषाओं; जैसे- अंग्रेजी, फारसी, अरबी से आकर हिंदी भाषा में मिल गए हैं, उन्हें आगत ध्वनियाँ कहते हैं; जैसे- ऑ, ज़, फ़ (घ) अयोगवाह ऐसे वर्ण होते हैं जो न तो व्यंजनों के मेल से बनते हैं और न स्वरों के मेल से। **2.** (क) स्वरों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से किया जाता है जबकि व्यंजनों का उच्चारण स्वरों की सहायता से किया जाता है। (ख) वर्णों के आपस में मेल को वर्ण-संयोग कहते हैं तथा किसी शब्द के वर्णों को पृथक्-पृथक् करना वर्ण-विच्छेद कहलाता है। (ग) दो व्यंजनों के मेल से बने वर्णों को संयुक्त व्यंजन कहते है तथा जब एक ही व्यंजन का शब्द में एक साथ दो बार प्रयोग होता है, उसे द्वित्व व्यंजन कहते हैं। **3.** (क) मूलध्वनि (ख) वर्णमाला (ग) स्वतंत्र (घ) स्वरों (ङ) आगत (च) अयोगवाह

4. (क) ब (ख) अ (ग) स (घ) ब (ङ) अ

5. (क) स (ख) द (ग) य (घ) अ (ङ) ब

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

3. अशुद्धियों का शोधन

1. (क) व्याकरण सीखने का प्रमुख प्रयोजन है, बोलने और लिखने में भाषा के मानक रूप का शुद्ध प्रयोग।

(ख) हिंदी भाषा में अ, इ, ऋ तथा उ ह्रस्व स्वर है तथा आ, ई, ऊ, ए, ऐ, औ दीर्घ स्वर हैं। कभी-कभी ह्रस्व स्वर की जगह दीर्घ स्वर और दीर्घ स्वर की जगह ह्रस्व स्वर का प्रयोग करने के कारण वर्तनी में अशुद्धियाँ पाई जाती है; जैसे- असान-आसान, इश्वर-ईश्वर, औस-ओस आदि।

2. (क) तुम्हारी बहन कहाँ रहती है? (ख) भगतसिंह का देख सदा आभारी रहेगा। (ग) हम आजाद भारत में रहते है। (घ) भारतवर्ष में अतिथि देवा भवः की परंपरा है। (ङ) कल इस मूर्ति का अनावरण होगा। (च) युधिष्ठिर जुए में सब हार गए। (छ) सिंधु से हिंदू बना है। (ज) जंग में उचित और अनुचित सब जायज है। (झ) सच्चा मित्र विपत्ति में काम आता है। (ञ) गुरु से बड़ा कोई नहीं है। (ट) हमें ईश्वर की आराधना करनी चाहिए। (ठ) संवाद प्रतियोगिता में हमारी कक्षा प्रथम आयी।

3. (क) बीमारी (ख) अक्षुण्ण (ग) औद्योगिक (घ) पारिवारिक (ङ) ज्योत्सना (च) संबंध

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

4. संधि

1. (क) निकटवर्णों के मेल से होने वाले परिवर्तन को संधि कहते हैं। संधि के तीन भेद हैं– स्वर संधि, व्यंजन संधि, विसर्ग संधि (ख) जब दो स्वर आपस में मिलकर एक नया रूप धारण करते हैं, तो उसे स्वर संधि कहते हैं; जैसे– रवि + इंद्र = रवींद्र। स्वर संधि के पाँच भेद हैं– दीर्घ, गुण, यण, वृद्धि, अयादि संधि। (ग) विसर्ग (:) के साथ स्वर या व्यंजन के मेल को विसर्ग संधि कहते हैं; जैसे– नम: + कार = नमस्कार, नि: + आशा = निराशा। (घ) संधि के नियमानुसार मिले वर्णों को अलग–अलग करने की प्रक्रिया संधि–विच्छेद कहलाती है; जैसे– विद्यार्थी = विद्या + अर्थी। **2.** (क) संधि (ख) तीन (ग) पाँच (घ) स्वर (ङ) व्यंजन **3.** (क) अ (ख) स (ग) द (घ) स (ङ) ब **4.** (क) सप्तर्षि (ख) तपोबल (ग) दिग्गज (घ) पित्राज्ञा (ङ) अत्याचार (च) गतैक्य (छ) संसार (ज) प्रत्युपकार

5. (क) भो + अन (ख) सत् + जन (ग) नि: + रस (घ) नारी + ईश्वर (ङ) वधू + उत्सव (च) धर्म + इंद्र (छ) अति + इव (ज) विद्या + अभ्यास

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

5. समास, उपसर्ग और प्रत्यय

समास 1. (क) जब दो या दो से अधिक शब्द मिलकर एक नया शब्द बनाते हैं, तो प्रक्रिया को समास कहते हैं; जैसे– तीन रंगों का समूह–तिरंगा (ख) समास करने के बाद जो शब्द बनता है उसे समस्तपद या सामासिक पद कहते है; जैसे– पीतांबर (ग) समास के छ: भेद होते हैं– तत्पुरुष समास, अव्ययीभाव समास, द्वंद्व समास, बहुव्रीहि समास, द्विगु समास, कर्मधारय समास (घ) समस्तपदों को अलग करने की प्रक्रिया समास–विग्रह कहलाती है।

2. (क) डाक (पूर्वपद) गाड़ी (उत्तरपद) (ख) भू (पूर्वपद) दान (उत्तरपद) (ग) मुनि (पूर्वपद) श्रेष्ठ (उत्तरपद) (घ) पवन (पूर्वपद) (पुत्र) (उत्तरपद) (ङ) नव (पूर्वपद) ग्रह (उत्तरपद)

3. (क) कालीमिर्च – कर्मधारय समास

(ख) रातोंरात – अव्ययीभाव समास

(ग) पीतांबर – बहुव्रीहि समास

(घ) यथाशक्ति – अव्ययीभाव समास

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

उपसर्ग 1. (क) जो शब्दांश मूल शब्द के प्रारम्भ में जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन कर देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहा जाता है; जैसे– अव (उपसर्ग) = अवगुण, अवशेष आदि। (ख) उपसर्गों को चार भागों में बाँटा गया है– संस्कृत के उपसर्ग, हिंदी के उपसर्ग, विदेशी भाषाओं से आगत उपसर्ग, अंग्रेजी के उपसर्ग **2.** (क) ब (ख) अ (ग) स (घ) अ (ङ) ब **3.** (क) वि (ख) प्रति (ग) निर् (घ) उत् (ङ) उप (च) दुर् (छ) प्र (ज) नि (झ) अव (ञ) अन्

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

प्रत्यय 1. (क) वे शब्दांश जो शब्दों के अंत में लगकर उनके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता उत्पन्न कर देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं, है; जैसे– आहट (प्रत्यय) = घबराहट (ख) जो प्रत्यय क्रिया की धातुओं के अंत में लगते हैं, उन्हें कृत प्रत्यय कहते हैं; जैसे– एरा = लुटेरा, आड़ी = खिलाड़ी आदि। (ग) जो शब्दांश क्रिया की धातुओं को छोड़कर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा अव्यय शब्दों के अंत में जुड़ते हैं, वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे– इन = सुनारिन, इका = गायिका आदि। (घ) उपसर्ग मूल शब्दों के प्रारंभ में जुड़ते हैं जबकि प्रत्यय मूल शब्दों के अंत में जुड़ते हैं। **2.** (क) अंत (ख) अंश (ग) स्वतंत्र (घ) तद्धित, अव्यय (ङ) कृदंत, धातु **3.** (क) द (ख) अ (ग) ब (घ) स (ङ) ब **4.** (क) ईला (ख) ता (ग) इक (घ) अक (ङ) आस (च) त्व (छ) आस (ज) आरी (झ) आना (ञ) कार (ट) ईय (ठ) आवट **5.** (क) मान (ख) अक्कड (ग) कार (घ) (ङ) खोर

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

6. शब्द–भंडार

1. (क) समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों को पर्यायवाची या समानार्थी शब्द कहते हैं। (ख) वे शब्द जो किसी शब्द के ठीक विपरीत अर्थ का बोध कराते हैं, उन्हें विपरीतार्थक शब्द कहते है; जैसे– आशा–निराशा। (ग) ऐसे शब्द जिन्हें ऊपर से देखने

पर कोई अंतर दिखाई नहीं देता परंतु उनके गूढ़ अर्थों पर ध्यान देने पर इनमें सूक्ष्म भेद स्पष्ट हो जाता है, उन्हें एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द कहते है; जैसे- आधि - मानसिक रोग, व्याधि- शरीरिक रोग (घ) जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ निकलते हो, उन्हें एकार्थी शब्द कहते है; जैसे- काल-मृत्यु, समय, यमराज आदि। (ङ) ऐसे शब्द जो शब्दों के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द कहते हैं; जैसे- जो ईश्वर में विश्वास रखता हो। आस्तिक **2.** (क) शेर, वनराज, केसरी (ख) सरिता, तटिनी, तरंगिणी (ग) अनूठा, अद्भुत, निराला (घ) ऋतुराज, मधुपति, ऋतुपति (ङ) भ्रमर, अलि, मधुकर **3.** (क) विपक्ष (ख) अपव्यय (ग) रात, हानि (घ) बेईमान (ङ) निर्यात **4.** (क) य (ख) र (ग) अ (घ) ब (ङ) स (च) द **5.** (क) शौक (ख) लक्ष्य (ग) योग्य (घ) अनभिज्ञ (ङ) उपेक्षा **6.** (क) अक्षम्य (ख) दार्शनिक (ग) लाइलाज (घ) ऐतिहासिक (ङ) गगनचुंबी **7.** (क) परामर्श (ख) अमूल्य (ग) पाप (घ) आरंभ किया (ङ) ग्रंथ **8.** (क) बादल, घना, भारी (ख) वर्ण, ईश्वर, आकाश (ग) धन, मतलब, कारण (घ) कार्य, कामदेव, इच्छा (ङ) लाभ, नतीजा, वृक्ष के फल

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

7. संज्ञा

1. (क) किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव या अवस्था के नाम को संज्ञा कहते हैं; जैसे- राम, दिल्ली, पेन्सिल, अच्छाई आदि। (ख) संम्पूर्ण जाति का बोध कराने वाले संज्ञा शब्द जातिवाचक संज्ञा कहलाते है; जैसे- गाँव, लड़का, आदि तथा किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध कराने वाले शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते है। **2.** (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓ **3.** (क) बचपन (ख) खोज (ग) बहाव (घ) सजावट (ङ) कुशाग्रता **4.** (क) समूहवाचक (ख) जातिवाचक (ग) व्यक्तिवाचक (घ) द्रव्यवाचक (ङ) भाववाचक (च) जातिवाचक (छ) द्रव्यवाचक (ज) भाववाचक

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

8. संज्ञा के विकारः लिंग

1. (क) शब्द के जिस रूप से स्त्री या पुरुष जाति के होने का बोध हो उसे लिंग कहते है; जैसे- आदमी, औरत। (ख) लिंग के दो भेद हैं- स्त्रीलिंग, पुल्लिग। स्त्रीलिंग से स्त्री जाति का बोध होता है तथा पुल्लिग से पुरुष जाति का। **2.** (क) अ (ख) ब (ग) स (घ) अ (ङ) ब **3.** (क) अध्यापिका छात्राओं को पढ़ा रही हैं। (ख) युवती चित्र देख रही है। (ग) शेरनी बकरी को पकड़ने के लिए भाग रही हैं। (घ) लेखिका ने सुन्दर रचना लिखीं। (ङ) ब्राहमणी की पुत्री गुड़िया से खेल रही है। **4.** (क) प्रिया (ख) कवयित्री (ग) याचिका (घ) शिष्य (ङ) हंसिनी (च) वधू **5.** **स्त्रीलिंग**- क, ख, ग, ङ, च। **पुल्लिग**- घ, छ, ज

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

9. संज्ञा के विकारः वचन

1. (क) शब्द के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं; जैसे- ताला-ताले। (ख) वचन दो प्रकार के होते हैं; एकवचन, बहुवचन। **2.** (क) भाषाएँ (ख) डलिया (ग) टोपी (घ) राजाओं **3.** (क) एकवचन (ख) एकवचन (ग) बहुवचन (घ) बहुवचन (ङ) एकवचन (च) एकवचन (छ) बहुवचन (ज) बहुवचन **4.** (क) लड़का खेल रहा है। (ख) माँ ने दो मालााएँ खरीदीं। (ग) घोड़ा दौड़ रहा है। (घ) अंत में सत्य की जीत होती है। (ङ) सर्दी में रात लम्बी होती है।

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

10. संज्ञा के विकारः कारक

1. (क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य में क्रिया या अन्य संज्ञा या सर्वनाम से जाना जाए उसे कारक कहते हैं। इसके आठ भेद हैं- कर्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, संप्रदान कारक, अपादान कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक, संबोधन कारक। (ख) कर्म कारक में क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है। तथा संप्रदान कारक में कर्ता देने का कार्य करता है। (ग) संज्ञा या सर्वनाम के जो रूप क्रिया के होने के साधन या माध्यम होते हैं उन्हें करण कारक कहते हैं। जबकि अपादान कारक में अलग होने का भाव प्रकट होता है।

2. (क) सड़क पर मत खेलो। (ख) हमने पत्र को

पढ़ा। (ग) ललित के कमरों में दो दरवाजे हैं। (घ) बच्चे बस से विद्यालय गए। (ङ) डॉक्टर ने मरीज को दवाई दी। **3.** (क) से (ख) में (ग) से (घ) के द्वारा (ङ) ने, को **4.** (क) संप्रदान (ख) संबंधकारक (ग) अधिकरण कारक (घ) अधिकरण कारक (ङ) संप्रदान कारक

गतिविधिः स्वयं कीजिए।

11. सर्वनाम

1. (क) संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते है। सर्वनाम के छः भेद हैं– पुरुषवाचक सर्वनाम, निश्चयवाचक सर्वनाम, अनिश्चयवाचक सर्वनाम, संबंधवाचक सर्वनाम, प्रश्नवाचक सर्वनाम, निजवाचक सर्वनाम (ख) जो सर्वनाम पास या दूर की वस्तु का निश्चयपूर्वक बोध कराते है, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम तथा जो सर्वनाम शब्द किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध कराएँ उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते है। **2.** (क) ब (ख) स (ग) अ (घ) स **3.** (क) किसका (ख) मुझसे (ग) आपका (घ) तुमसे **4.** (क) प्रश्नवाचक सर्वनाम (ख) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (ग) निजवाचक सर्वनाम (घ) संबंधवाचक सर्वनाम (ङ) पुरुषवाचक सर्वनाम (च) प्रश्नवाचक सर्वनाम

गतिविधिः स्वयं कीजिए।

12. विशेषण

1. (क) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं जैसे– काला कुर्ता, सफेद गाय आदि। (ख) जिन शब्दों की विशेषता बताई जाती है, वे विशेष्य कहलाते है जैसे– सफेद गाय में गाय विशेष्य है। (ग) विशेषण शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द प्रविशेषण कहलाते है; जैसे– यह पर्वत बहुत ऊँचा है। (घ) परिमाणवाचक विशेषण वस्तु की नाप तोल बताते है जबकि संख्यावाचक विशेषण वस्तु की संख्या बताते हैं। **2.** (क) पर्याप्त (विशेषण) आम (विशेष्य) (ख) हरी–भरी (विशेषण) फसल (विशेष्य) (ग) काली (विशेषण) बिल्ली (विशेष्य) (घ) ठंडी (विशेषण) हवा (विशेष्य) (ङ) कुछ (विशेषण) स्त्रियाँ (विशेष्य) **3.** स्वयं कीजिए।

4. (क) (कम) मूलावस्था (ख) (प्राचीनतम) उत्तमावस्था (ग) (प्रसिद्ध) मूलावस्था (घ) (सर्वोपरि) उत्तमावस्था

5. (क) विजयी (ख) विनाशकारी (ग) उपयोगी (घ) स्वर्णिम **6.** नुकीला–पत्थर, हरी–घास, काले–बादल, ठंडा–पानी, एक–राजा।

गतिविधिः स्वयं कीजिए।

13. क्रिया

1. (क) जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का बोध हो उसे क्रिया कहते हैं। जैसे– जाना, आना, खाना, पीना। (ख) जिन क्रियाओं का कर्म होता है, उन्हें सकर्मक तथा जिन क्रियाओं का कर्म नहीं होता उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं। (ग) रचना के आधार पर क्रिया के पाँच भेद होते हैं– सामान्य क्रिया, संयुक्त क्रिया, नामधातु क्रिया प्रेरणार्थक क्रिया, पूर्वकालिक क्रिया **2.** (क) सकर्मक (ख) अकर्मक (ग) सकर्मक (घ) अकर्मक (ङ) अकर्मक **3.** (क) बच्चे पढ़कर सो जाएँगे। (ख) राधा परीक्षा की तैयारी करके विद्यालय गई। (ग) पेंटर काम करके घर चला गया। (घ) हम सामान खरीदकर घर आ गए। (ङ) राधिका खाना खाकर पढ़ने गई। **4.** (क) लिख (ख) जा (ग) चल (घ) बैठ (ङ) सुन (च) पढ़

गतिविधिः स्वयं कीजिए।

14. क्रिया के काल

1. (क) क्रिया के जिस रूप से कार्य के करने या होने के समय का बोध होता है, उसे काल कहते हैं। जैसे– मैं जा रहा हूँ। वह खेलेगा, तुम पढ़ रहे थे। (ख) भूतकाल का अर्थ है बीता हुआ समय तथा इसमें हुए कार्य। इसके छः भेद है– सामान्य भूतकाल, आसन्न भूतकाल, अपूर्ण भूतकाल, पूर्ण भूतकाल, संदिग्ध भूतकाल, हेतु–हेतुमद् भूतकाल। (ग) वर्तमान समय में कार्य होने का बोध कराने वाले समय को वर्तमानकाल कहते हैं। इसके तीन भेद हैं– सामान्य वर्तमानकाल, संदिग्ध वर्तमान काल, अपूर्ण वर्तमानकाल (घ) आने वाले समय में कार्य के होने का बोधा कराने वाले काल को भविष्यत् काल कहते हैं। इसके तीन भेद हैं– सामान्य भविष्यत् काल, संभाव्य भविष्यत् काल हेतु–हेतुमद् भविष्यत्

काल 2. (क) काल (ख) वर्तमान (ग) पूर्ण भूतकाल (घ) अपूर्ण वर्तमान काल 3. (क) गरिमा झूला झूल रही थी। (ख) अंशुल ने सत्य बोला। (ग) बालक क्रिकेट खेल रहे हैं। (घ) पंडित जी रामायण पढ़ेंगे। 4. (क) हेतु-हेतुमद् भूतकाल (ख) सामान्य वर्तमान काल (ग) संदिग्ध वर्तमान काल (घ) संभाव्य भविष्यत् काल

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

15. वाच्य

1. (क) क्रिया के जिए रूप से यह ज्ञात हो कि वह कर्ता, कर्म या भाव में किसके अनुसार प्रयोग की गई है, वह वाच्य कहलाता है। (ख) वाच्य के तीन भेद हैं- कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य 2. (क) शेर ने हिरन को मारा। (ख) दोनों गीत गाएँगे। (ग) हम रोज समाचार सुनते हैं। (घ) बच्चा सेब खा रहा है। (ङ) अध्यापकों ने विद्यार्थियों को डाँटा। 3. (क) हमारे द्वारा गीत गाए जाएँगे। (ख) घोड़े के द्वारा घास खाया जाता है। (ग) धोबी द्वारा कपड़े धोए जा रहे हैं। (घ) पिताजी द्वारा आम लाए गए। (ङ) चाचा द्वारा अखबार पढ़ा जा रहा है। 4. (क) सिपाही के द्वारा सड़क पर जाया जा रहा है। (ख) उससे खेला नहीं जाता। (ग) गाय के द्वारा घास खाई जाती है। (घ) उनके द्वारा जाया जाता है। (ङ) रमेश द्वारा अभी सोया जाएगा। 5. (क) कर्तृवाच्य (ख) कर्तृवाच्य (ग) भाववाच्य (घ) कर्मवाच्य (ङ) भाववाच्य

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

16. अव्यय या अविकारी शब्द

1. (क) जिन शब्दों में लिंग, वचन या कारक के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता उन्हें अव्यय कहते हैं; जैसे- धीरे-धीरे, के साथ, और, वाह आदि। (ख) अव्यय के चार भेद हैं- क्रियाविशेषण, संबंधबोधाक, समुच्चबोधक तथा विस्मयादिबोधक

2. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓
3. (क) हाथों-हाथ (रीतिवाचक) (ख) अधिक (परिमाणवाचक) (ग) एकाएक (रीतिवाचक) (घ) थोड़ा (परिमाणवाचक) (ङ) अब (कालवाचक) 4. (क) के पास (ख) के ऊपर (ग) के निकट (घ) से पहले (ङ) के सहारे
5. (क) ताकि (ख) इसलिए (ग) वाह (घ) सावधान (ङ) क्योकिं

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

17. वाक्य

1. (क) शब्दों का वह सार्थक समूह जो व्यवस्थित हो और कोई अर्थ देता हो, वाक्य कहलाता है। (ख) रचना की दृष्टि से वाक्य के प्रकार- सरल, संयुक्त और मिश्रित वाक्य। (ग) अर्थ की दृष्टि से वाक्य के प्रकार विधानार्थक, निषेधार्थक, प्रश्नार्थक, आज्ञार्थक, संदेतार्थक, संकेतार्थक, इच्छार्थक, विस्मयार्थक

2.	**उद्देश्य**	**विधेय**
(क)	गंगा	एक पवित्र नदी है।
(ख)	मेरे भाई ने	बाजार से आम खरीदे।
(ग)	भिखारी	सड़क पर खड़ा है।
(घ)	सूर्य	पूर्व में निकलता है।
(ङ)	वह	कक्षा से बाहर चला गया।

3. (क) प्रश्नार्थक वाक्य (ख) संकेतार्थक वाक्य (ग) आज्ञार्थक वाक्य (घ) इच्छार्थक वाक्य (ङ) संदोहार्थक वाक्य 4. (क) सरल वाक्य (ख) मिश्रित वाक्य (ग) संयुक्त वाक्य (घ) संयुक्त वाक्य (ङ) संयुक्त वाक्य 5. (क) वह दूध पीते ही सो गया। (ख) सूर्योदय हुआ कि अँधेरा चला गया। (ग) कृतिका ने समझाया और राहुल मान गया।

गतिविधि: स्वयं कीजिए।

18. विराम-चिह्न

1. (क) कथन के स्पष्टीकरण, शैली को गतिशील और विचारों को सुबोध बनाने के लिए जिन चिन्हों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं। (ख) वाक्य के सुंदर गठन और भावाभिव्यक्ति के लिए विराम-चिह्नों की आवश्यकता और उपयोगिता मानी गई है। 2. स्वयं कीजिए। 3. (क) ए० आई० आर० (ख) डॉ० एल० एम० पाठक (ग) प्रो० ए० पी० रस्तोगी (घ) पं० बी० के० मेहता 4. (क) उसकी नौकरी लग गई। (ख) उसे लगा वह बूढ़ा भी सो चुका था। (ग) उसके साहब प्रत्येक मंगल मंदिर जाते थे। (घ) ताऊ जी उसे ने उसे आर्शीवाद दिया। (ङ) दादीजी के माला फेरने पर उसे घोर आपत्ति थी।

गतिविधि: स्वयं कीजिए।